CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2015 with Solution PDF-Set 2/2

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक: 100**

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 14 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 4, 5, 7, 8, 9, 11 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

नीड़ का निर्माण फिर-फिर
नेह का आह्वान फिर-फिर
वह उठी आँधी कि नभ में
छा गया सहसा अँधेरा
धूलि-धूसर बादलों ने
भूमि को इस भाँति घेरा,
रात-सा दिन हो गया फिर
रात आई और काली,
लग रहा था अब न होगा,
इस निशा का फिर सवेरा,
रात के उत्पात-भय से
भीत जन-जन, भीत कण-कण
किंतु प्राची से उषा की
मोहिनी मुस्कान फिर-फिर ।
नीड़ का निर्माण फिर-फिर
नेह का आह्वान फिर-फिर [5 अंक]

1(क). आँधी तथा बादल किसके प्रतीक हैं ? इनके क्या परिणाम होते हैं ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्य में प्रतीक और उनका प्रभाव का विवेचन करते समय दिए गए पाठ के संकेतों और उसके केंद्रीय भाव को आधार बनाना चाहिए।
- उत्तर में प्रश्न की प्रत्येक अपेक्षा का स्पष्ट और प्रसंगानुकूल उल्लेख आवश्यक है।

चरण 1: आँधी और बादलों का प्रतीकार्थ पहचानें आँधी और धूलि-धूसर बादल जीवन में आने वाली विपत्तियों, संकटों और बाधाओं के प्रतीक हैं। उनका अचानक छा जाना बताता है कि कठिनाइयाँ मनुष्य के सामान्य जीवन को अस्थिर कर सकती हैं।

चरण 2: परिणाम को काव्यांश से जोड़ें इनके कारण प्रकाश दब जाता है और चारों ओर अँधेरा तथा भय फैल जाता है। 'भीत जन-जन, भीत कण-कण' में इसी व्यापक आतंक का चित्रण है। मनुष्य को लगता है कि संकट की रात कभी समाप्त नहीं होगी।

चरण 3: निष्कर्ष आँधी तथा बादल जीवन के संकटों के प्रतीक हैं; इनके परिणामस्वरूप अँधेरा, भय और निराशा छा जाती है।

त्वरित सुझाव: प्रतीक का अर्थ बताते समय उसके बाद चित्रित अँधेरे और भय को परिणाम के रूप में अवश्य जोड़ें।

1(ख). कवि निर्माण का आह्वान क्यों करता है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पुनर्निर्माण और आशा का संदेश का विवेचन करते समय दिए गए पाठ के संकेतों और उसके केंद्रीय भाव को आधार बनाना चाहिए।
- उत्तर में प्रश्न की प्रत्येक अपेक्षा का स्पष्ट और प्रसंगानुकूल उल्लेख आवश्यक है।

चरण 1: विनाश की स्थिति समझें आँधी और अँधकार से जीवन में भय और निराशा फैल गई है। ऐसे समय मनुष्य के लिए केवल विनाश देखकर बैठ जाना उचित नहीं है। नीड़ का निर्माण जीवन को सँवारने और उजड़े संसार को फिर बसाने का संकेत है।

चरण 2: आह्वान का उद्देश्य स्पष्ट करें कवि चाहता है कि मनुष्य संकटों से हार न माने, बल्कि प्रेम और आशा के साथ सृजन में फिर जुटे। 'नेह का आह्वान फिर-फिर' निर्माण को प्रेम से जोड़ता है और उषा की मुस्कान नए आरंभ की संभावना जगाती है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि निराश मनुष्य में आशा और साहस जगाकर उसे प्रेमपूर्वक जीवन का पुनर्निर्माण करने के लिए प्रेरित करना चाहता है।

त्वरित सुझाव: निर्माण के आह्वान को केवल घर बनाने तक सीमित न रखें; उसे जीवन सँवारने और आशा से जोड़ें।

1(ग). कवि किस बात से भयभीत है और क्यों ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में भय की स्थिति का विवेचन करते समय दिए गए पाठ के संकेतों और उसके केंद्रीय भाव को आधार बनाना चाहिए।
- उत्तर में प्रश्न की प्रत्येक अपेक्षा का स्पष्ट और प्रसंगानुकूल उल्लेख आवश्यक है।

चरण 1: भय का विषय पहचानें काव्यांश में आँधी, गहरे बादलों और बढ़ते अँधेरे का भय है। कवि 'रात के उत्पात-भय से' जन-जन और कण-कण को डरा हुआ दिखाता है। प्रश्न के अनुसार इसी स्थिति को कवि की भयभीत अनुभूति के रूप में समझना चाहिए।

चरण 2: भय का कारण स्पष्ट करें अँधेरा इतना सघन हो गया है कि दिन भी रात जैसा लगता है और रात उससे भी काली हो जाती है। 'अब न होगा, इस निशा का फिर सवेरा' से आशंका व्यक्त होती है कि संकट और निराशा शायद कभी दूर नहीं होंगे।

चरण 3: निष्कर्ष कवि प्रचंड आँधी और घोर अँधकार के उत्पात से भयभीत है, क्योंकि ऐसा लगता है कि यह संकटपूर्ण रात कभी समाप्त नहीं होगी।

त्वरित सुझाव: भय का कारण लिखते समय सवेरा न होने की आशंका वाली पंक्तियों का सहारा लें।

1(घ). उषा की मुस्कान मानव-मन को क्या प्रेरणा देती है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उषा का आशावादी प्रतीकार्थ का विवेचन करते समय दिए गए पाठ के संकेतों और उसके केंद्रीय भाव को आधार बनाना चाहिए।
- उत्तर में प्रश्न की प्रत्येक अपेक्षा का स्पष्ट और प्रसंगानुकूल उल्लेख आवश्यक है।

चरण 1: उषा और अँधकार का संबंध समझें उषा का आगमन घनी अँधेरी रात के बाद होता है। उसकी मोहिनी मुस्कान से स्पष्ट होता है कि भय और निराशा की स्थिति स्थायी नहीं है। प्रकाश का लौटना कठिन समय के बीतने और नए अवसर मिलने का संकेत है।

चरण 2: मानव-मन को मिलने वाली प्रेरणा बताएँ उषा मनुष्य को कठिनाइयों में धैर्य रखने, आशा बनाए रखने और फिर से निर्माण करने की प्रेरणा देती है। वह बताती है कि संकट आने पर हार मानने के बजाय नए उत्साह और प्रेम से जीवन सँवारना चाहिए। यही भाव 'नीड़ का निर्माण फिर-फिर' से जुड़ता है।

चरण 3: निष्कर्ष उषा की मुस्कान संकटों के बाद सुखद समय आने का विश्वास जगाकर मानव-मन को आशा, साहस और पुनर्निर्माण की प्रेरणा देती है।

त्वरित सुझाव: उषा की मुस्कान का उत्तर लिखते हुए अँधकार के अंत और निर्माण के नए उत्साह को साथ रखें।

1(ङ). 'रात आई और काली' का आशय स्पष्ट कीजिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पंक्ति का प्रसंगानुकूल आशय का विवेचन करते समय दिए गए पाठ के संकेतों और उसके केंद्रीय भाव को आधार बनाना चाहिए।
- उत्तर में प्रश्न की प्रत्येक अपेक्षा का स्पष्ट और प्रसंगानुकूल उल्लेख आवश्यक है।

चरण 1: शाब्दिक स्थिति समझें आँधी और धूल भरे बादलों के कारण दिन में ही रात जैसा अँधेरा छा गया था। इसके बाद वास्तविक रात आई तो अँधकार और अधिक घना हो गया। 'और काली' अँधेरे की इसी बढ़ती हुई तीव्रता को व्यक्त करता है।

चरण 2: भावात्मक संकेत स्पष्ट करें पंक्ति का आशय यह भी है कि पहले से संकटग्रस्त जीवन में विपत्तियाँ और बढ़ गईं। आशा का प्रकाश दब गया और भय तथा निराशा गहरी हो गई। इसी घोर स्थिति के कारण लोगों को लगने लगा कि अब इस रात का सवेरा नहीं होगा।

चरण 3: निष्कर्ष इस पंक्ति का आशय है कि पहले से छाया अँधेरा और सघन हो गया; जीवन के संकट, भय और निराशा भी अधिक गहरे हो गए।

त्वरित सुझाव: आशय में पहले आँधी से अँधेरे हुए दिन और फिर उससे अधिक अँधेरी रात का क्रम स्पष्ट करें।

---

2. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

जब समाचार-पत्रों में सर्वसाधारण के लिए कोई सूचना प्रकाशित की जाती है तो उसको विज्ञापन कहते हैं । यह सूचना नौकरियों से सम्बन्धित हो सकती है, खाली मकान को किराये पर उठाने के सम्बन्ध में हो सकती है या किसी औषधि के प्रचार से सम्बन्धित हो सकती है । कुछ लोग विज्ञापन के आलोचक हैं । वे इसे निरर्थक मानते हैं । उनका मानना है कि यदि कोई वस्तु यथार्थ रूप में अच्छी है तो वह बिना किसी विज्ञापन के ही लोगों के बीच लोकप्रिय हो जाएगी जबकि ख़राब वस्तुएँ विज्ञापन की सहायता पाकर भी भंडाफोड़ होने पर बहुत दिनों तक टिक नहीं पाएँगीं । परन्तु लोगों की यह सोच ग़लत है ।

आज के युग में मानव का प्रचार-प्रसार का दायरा व्यापक हो चुका है । अतः विज्ञापनों का होना अनिवार्य हो जाता है । किसी अच्छी वस्तु की वास्तविकता से परिचय पाना आज के विशाल संसार में विज्ञापन के बिना नितान्त असंभव है । विज्ञापन ही वह शक्तिशाली माध्यम है जो हमारी ज़रूरत की वस्तुएँ प्रस्तुत करता है, उनकी माँग बढ़ाता है और अंततः हम उन्हें जुटाने चल पड़ते हैं । यदि कोई व्यक्ति या कम्पनी किसी वस्तु का निर्माण करती है, उसे उत्पादक कहा जाता है । उन वस्तुओं और सेवाओं को ख़रीदने वाला उपभोक्ता कहलाता है । इन दोनों को जोड़ने का कार्य विज्ञापन करता है । वह उत्पादक को उपभोक्ता के सम्पर्क में लाता है तथा माँग और पूर्ति में संतुलन स्थापित करने का प्रयत्न करता है ।

पुराने ज़माने में किसी वस्तु की अच्छाई का विज्ञापन मौखिक तरीक़े से होता था । काबुल का मेवा, कश्मीर की ज़री का काम, दक्षिण भारत के मसाले आदि वस्तुओं की प्रसिद्धि मौखिक रूप से होती थी । उस समय आवश्यकता भी कम होती थी तथा लोग किसी वस्तु के अभाव की तीव्रता का अनुभव नहीं करते थे । आज समय तेज़ी का है । संचार-क्रांति ने ज़िन्दगी को स्पीड दे दी है । मनुष्य की आवश्यकताएँ बढ़ती जा रही हैं । इसलिए विज्ञापन मानव-जीवन की अनिवार्यता बन गया है । [15 अंक]

2(क). गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक दीजिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश के केंद्रीय भाव पर शीर्षक का विवेचन करते समय दिए गए पाठ के संकेतों और उसके केंद्रीय भाव को आधार बनाना चाहिए।
- उत्तर में प्रश्न की प्रत्येक अपेक्षा का स्पष्ट और प्रसंगानुकूल उल्लेख आवश्यक है।

चरण 1: मुख्य विषय पहचानें गद्यांश का केंद्र विज्ञापन है। लेखक उसकी परिभाषा देता है, आलोचकों के विचार रखता है और फिर बताता है कि व्यापक संसार में वस्तुओं की जानकारी लोगों तक पहुँचाने के लिए विज्ञापन आवश्यक है। शीर्षक में इसी केंद्रीय विषय का उल्लेख होना चाहिए।

चरण 2: समग्र कथ्य को संक्षिप्त करें आगे उत्पादक और उपभोक्ता को जोड़ने, माँग बढ़ाने तथा आधुनिक जीवन की बढ़ती आवश्यकताओं में विज्ञापन की भूमिका बताई गई है। इसलिए ऐसा शीर्षक उचित है जो केवल विज्ञापन का नाम न बताए, बल्कि वर्तमान जीवन में उसके महत्त्व को भी समेटे।

चरण 3: निष्कर्ष उपयुक्त शीर्षक: आधुनिक जीवन में विज्ञापन का महत्त्व।

त्वरित सुझाव: शीर्षक चुनते समय परिभाषा, उपयोगिता और आधुनिक आवश्यकताओं को समेटने वाला केंद्रीय भाव पकड़ें।

2(ख). विज्ञापन किसे कहते हैं ? वह मानव जीवन का अनिवार्य अंग क्यों माना जाता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विज्ञापन की परिभाषा और अनिवार्यता का विवेचन करते समय दिए गए पाठ के संकेतों और उसके केंद्रीय भाव को आधार बनाना चाहिए।
- उत्तर में प्रश्न की प्रत्येक अपेक्षा का स्पष्ट और प्रसंगानुकूल उल्लेख आवश्यक है।

चरण 1: विज्ञापन का अर्थ स्पष्ट करें गद्यांश के अनुसार समाचार-पत्रों में सर्वसाधारण के लिए प्रकाशित सूचना विज्ञापन कहलाती है। यह सूचना नौकरी, खाली मकान को किराये पर देने या किसी औषधि के प्रचार से संबंधित हो सकती है। इस प्रकार इसका मूल काम ऐसी सूचना लोगों तक पहुँचाना है जो उनकी आवश्यकता से जुड़ी हो।

चरण 2: आधुनिक जीवन में आवश्यकता समझाएँ आज संसार और प्रचार-प्रसार का दायरा बहुत व्यापक हो गया है। अच्छी वस्तु भी केवल अच्छी होने के कारण हर व्यक्ति के ध्यान में नहीं आ सकती। विज्ञापन उस वस्तु की वास्तविकता और उपलब्धता से परिचय कराता है। संचार-क्रांति से जीवन की गति तेज हुई है और मनुष्य की आवश्यकताएँ बढ़ी हैं; इसलिए आवश्यक वस्तुओं और सेवाओं की जानकारी देने वाला यह माध्यम अनिवार्य बन गया है।

चरण 3: निष्कर्ष समाचार-पत्र में जनसाधारण हेतु प्रकाशित सूचना विज्ञापन है। व्यापक संसार, तेज जीवन और बढ़ती आवश्यकताओं के बीच उपयोगी वस्तुओं की जानकारी पहुँचाने के कारण यह मानव-जीवन का अनिवार्य अंग है।

त्वरित सुझाव: उत्तर के दो भाग रखें: पहले सूचना के रूप में परिभाषा दें, फिर व्यापक संसार और बढ़ती आवश्यकताओं से अनिवार्यता समझाएँ।

2(ग). उत्पादक किसे कहते हैं ? उत्पादक-उपभोक्ता सम्बन्धों को विज्ञापन कैसे प्रभावित करता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्पादक और उपभोक्ता के बीच विज्ञापन की भूमिका का विवेचन करते समय दिए गए पाठ के संकेतों और उसके केंद्रीय भाव को आधार बनाना चाहिए।
- उत्तर में प्रश्न की प्रत्येक अपेक्षा का स्पष्ट और प्रसंगानुकूल उल्लेख आवश्यक है।

चरण 1: उत्पादक की पहचान करें गद्यांश के अनुसार किसी वस्तु का निर्माण करने वाला व्यक्ति या कंपनी उत्पादक कहलाता है। इसके विपरीत वस्तुओं और सेवाओं को खरीदने वाला उपभोक्ता है। इस अंतर को स्पष्ट करने से समझ आता है कि एक पक्ष वस्तु उपलब्ध कराता है और दूसरा अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए उसे प्राप्त करता है।

चरण 2: संपर्क और संतुलन में विज्ञापन की भूमिका बताएँ विज्ञापन उत्पादक की वस्तुओं तथा सेवाओं की जानकारी उपभोक्ता तक पहुँचाकर दोनों को जोड़ता है। वह उपभोक्ता को उसकी जरूरत की वस्तुओं से परिचित कराता है, उनकी माँग बढ़ाता है और उन्हें जुटाने के लिए प्रेरित करता है। इस प्रकार उत्पादक उपभोक्ता के संपर्क में आता है। गद्यांश के अनुसार विज्ञापन माँग और पूर्ति में संतुलन स्थापित करने का प्रयत्न भी करता है; इसलिए दोनों के बीच उसका सेतु जैसा स्थान है।

चरण 3: निष्कर्ष वस्तु बनाने वाला व्यक्ति या कंपनी उत्पादक है। विज्ञापन उसकी वस्तुओं से उपभोक्ता को परिचित कराकर दोनों में संपर्क बनाता है तथा माँग और पूर्ति में संतुलन लाने का प्रयत्न करता है।

त्वरित सुझाव: उत्पादक को खरीदार न लिखें; निर्माण करने वाले और खरीदने वाले का अंतर बताकर विज्ञापन की जोड़ने वाली भूमिका स्पष्ट करें।

2(घ). किसी विज्ञापन का उद्देश्य क्या होता है ? जीवन में इसकी उपयोगिता पर प्रकाश डालिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विज्ञापन का उद्देश्य और दैनिक उपयोगिता का विवेचन करते समय दिए गए पाठ के संकेतों और उसके केंद्रीय भाव को आधार बनाना चाहिए।
- उत्तर में प्रश्न की प्रत्येक अपेक्षा का स्पष्ट और प्रसंगानुकूल उल्लेख आवश्यक है।

चरण 1: प्रमुख उद्देश्य बताएँ विज्ञापन का उद्देश्य किसी सूचना, वस्तु या सेवा से जनसाधारण को परिचित कराना है। गद्यांश में यह ऐसा शक्तिशाली माध्यम है जो हमारी जरूरत की वस्तुएँ हमारे सामने प्रस्तुत करता है, उनकी माँग बढ़ाता है और हमें उन्हें जुटाने के लिए प्रेरित करता है। अत: परिचय और माँग का निर्माण उसके प्रमुख उद्देश्य हैं।

चरण 2: जीवन में उपयोगिता स्पष्ट करें विज्ञापन के माध्यम से नौकरी की सूचना, किराये पर उपलब्ध मकान या औषधि संबंधी जानकारी लोगों तक पहुँच सकती है। विशाल संसार में हर उपयोगी वस्तु का परिचय अपने आप नहीं मिलता, इसलिए यह हमारी बढ़ती आवश्यकताओं की पूर्ति में सहायक है। यह उत्पादक और उपभोक्ता को संपर्क में लाकर माँग तथा पूर्ति के बीच संतुलन बनाने का प्रयत्न भी करता है। तेज गति वाले आधुनिक जीवन में इसी कारण इसकी उपयोगिता बढ़ गई है।

चरण 3: निष्कर्ष विज्ञापन का उद्देश्य सूचना देना, उपयोगी वस्तुओं से परिचित कराना और उनकी माँग बढ़ाना है। यह आवश्यकताओं की पूर्ति तथा उत्पादक-उपभोक्ता के संपर्क में सहायक होने से जीवन में उपयोगी है।

त्वरित सुझाव: उद्देश्य के बाद उपयोगिता लिखते समय गद्यांश के नौकरी, मकान और औषधि वाले उदाहरणों का प्रयोग करें।

2(ङ). पुराने समय में विज्ञापन का तरीक़ा क्या था ? वर्तमान तकनीकी युग ने इसे किस प्रकार प्रभावित किया है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर में पुराने प्रचार-तरीके और वर्तमान संचार-व्यवस्था का अंतर गद्यांश के आधार पर स्पष्ट करना है।
- गद्यांश में मौखिक प्रसिद्धि और संचार-क्रांति के कारण बढ़ी गति दोनों का उल्लेख है।

चरण 1: पुरानी पद्धति पहचानिए पुराने समय में वस्तु की अच्छाई का प्रचार मौखिक रूप से होता था। लोग एक-दूसरे को उसके गुण बताते थे और इसी प्रकार उसकी प्रसिद्धि फैलती थी। काबुल का मेवा, कश्मीर की ज़री और दक्षिण भारत के मसाले इसके दिए हुए उदाहरण हैं। उस समय आवश्यकताएँ कम थीं और वस्तुओं के अभाव का अनुभव भी इतना तीव्र नहीं था।

चरण 2: वर्तमान परिवर्तन स्पष्ट कीजिए आज संचार-क्रांति ने जीवन की गति बढ़ा दी है तथा प्रचार-प्रसार का दायरा बहुत व्यापक हो गया है। मनुष्य की आवश्यकताएँ भी लगातार बढ़ रही हैं। इसलिए वस्तुओं की जानकारी पहुँचाने के लिए केवल मौखिक प्रसिद्धि पर्याप्त नहीं रही और विज्ञापन जीवन की अनिवार्यता बन गया है।

चरण 3: निष्कर्ष पुराने समय में विज्ञापन मौखिक था। वर्तमान तकनीकी युग में संचार की गति और प्रचार का विस्तार बढ़ने से विज्ञापन अधिक व्यापक तथा आवश्यक हो गया है।

त्वरित सुझाव: उत्तर के पहले भाग में मौखिक प्रचार और दूसरे में संचार-क्रांति का प्रभाव अवश्य लिखिए।

2(च). विज्ञापन के आलोचकों के विज्ञापन के सन्दर्भ में क्या विचार हैं ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलोचकों के मत को लेखक के मत से अलग करके प्रस्तुत करना है।
- प्रश्न विज्ञापन की उपयोगिता नहीं, उसकी आलोचना करने वालों की दलीलें पूछता है।

चरण 1: अच्छी वस्तु संबंधी मत आलोचक विज्ञापन को निरर्थक मानते हैं। उनके अनुसार यदि कोई वस्तु वास्तव में अच्छी है तो उसकी गुणवत्ता ही उसे लोगों के बीच लोकप्रिय बना देगी। उसे प्रसिद्ध होने के लिए विज्ञापन की सहायता की आवश्यकता नहीं होगी। इस दलील में वे वस्तु के वास्तविक गुणों को प्रचार से अधिक महत्त्व देते हैं।

चरण 2: ख़राब वस्तु संबंधी मत उनका दूसरा तर्क है कि खराब वस्तु विज्ञापन की सहायता से कुछ समय के लिए बिक सकती है, पर उसका भंडाफोड़ हो जाने पर वह अधिक दिनों तक बाज़ार में टिक नहीं सकती। इसलिए वे विज्ञापन को स्थायी सफलता का साधन नहीं मानते। गद्यांश का लेखक आगे इस सोच को गलत कहता है, किंतु वह लेखक का प्रतिवाद है, आलोचकों की राय नहीं।

चरण 3: निष्कर्ष आलोचकों के अनुसार विज्ञापन निरर्थक है, क्योंकि अच्छी वस्तु स्वयं लोकप्रिय हो जाती है और खराब वस्तु विज्ञापन के बावजूद असलियत खुलने पर टिक नहीं पाती।

त्वरित सुझाव: आलोचकों के दोनों तर्क लिखिए; लेखक द्वारा विज्ञापन के समर्थन को उनकी राय में मत मिलाइए।

2(छ). आज की भाग-दौड़ की ज़िन्दगी में विज्ञापन का महत्त्व उदाहरण देकर समझाइए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न में विज्ञापन का महत्त्व गद्यांश के विचारों तथा उसी में दिए उदाहरणों से समझाना है।
- विज्ञापन आवश्यक सूचना देकर उत्पादक और उपभोक्ता को जोड़ता है।

चरण 1: उपयोगिता स्पष्ट कीजिए आज संचार-क्रांति के कारण जीवन तेज़ हो गया है और मनुष्य की आवश्यकताएँ बढ़ रही हैं। व्यापक संसार में हर उपयोगी वस्तु या सेवा की जानकारी अपने आप मिल जाना संभव नहीं है। विज्ञापन हमारी आवश्यकता की वस्तुओं से परिचित कराता है, उनकी माँग बढ़ाता है और हमें उन्हें प्राप्त करने के लिए प्रेरित करता है। वह उत्पादक को उपभोक्ता तक पहुँचाकर माँग तथा पूर्ति में संतुलन बनाने का प्रयत्न भी करता है।

चरण 2: गद्यांश से उदाहरण दीजिए उदाहरण के लिए समाचार-पत्र में नौकरी की सूचना प्रकाशित होने पर काम खोजने वाले व्यक्ति को अवसर का पता चलता है। इसी प्रकार खाली मकान किराये पर देने का विज्ञापन मकान देने वाले और मकान चाहने वाले को संपर्क में लाता है। ये उदाहरण बताते हैं कि तेज़ जीवन में विज्ञापन आवश्यक जानकारी तथा संपर्क का उपयोगी माध्यम है।

चरण 3: निष्कर्ष भाग-दौड़ के जीवन में विज्ञापन वस्तुओं, सेवाओं और अवसरों की जानकारी देता है। नौकरी और किराये के मकान की सूचनाएँ इसकी उपयोगिता के स्पष्ट उदाहरण हैं।

त्वरित सुझाव: महत्त्व बताते समय गद्यांश में दिए नौकरी या मकान के विज्ञापन का उदाहरण जोड़िए।

2(ज). उपसर्ग-प्रत्यय पृथक् कीजिए :

अनिवार्य, वास्तविकता । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उपसर्ग शब्द के पहले और प्रत्यय शब्द के अंत में जुड़कर उसके अर्थ या रूप में परिवर्तन करता है।
- शब्द-विभाजन में मूल शब्द के अक्षरों को मनमाने ढंग से अलग नहीं करना चाहिए।

चरण 1: अनिवार्य का विभाजन अनिवार्य का विभाजन अ + निवार्य है। यहाँ अ उपसर्ग निषेध का अर्थ देता है। निवार्य का अर्थ है जिसे टाला जा सके; अनिवार्य का अर्थ है जिसे टाला न जा सके। इस प्रकार आरंभिक अ को उपसर्ग के रूप में अलग करके मूल शब्द निवार्य सुरक्षित रखा जाता है।

चरण 2: वास्तविकता का विभाजन वास्तविकता का विभाजन वास्तविक + ता है। यहाँ ता प्रत्यय है, जो विशेषण वास्तविक से भाववाचक संज्ञा बनाता है। वास्तविकता का अर्थ वास्तविक होने का भाव या वस्तुस्थिति है। प्रश्न में प्रत्यय पृथक् करने के लिए वास्तविक को आधार मानकर ता अलग करना पर्याप्त है।

चरण 3: निष्कर्ष अनिवार्य : अ उपसर्ग + निवार्य। वास्तविकता : वास्तविक + ता प्रत्यय।

त्वरित सुझाव: पहले शब्द में निषेधसूचक अ और दूसरे में भाववाचक संज्ञा बनाने वाला ता पहचानिए।

2(झ). मिश्र वाक्य में बदलिए :

'वस्तुओं और सेवाओं को ख़रीदने वाला उपभोक्ता कहलाता है ।' [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मिश्र वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य और एक आश्रित उपवाक्य होता है।
- रूपांतरण में मूल कथन का अर्थ तथा कर्ता-क्रिया का संबंध सुरक्षित रखना चाहिए।

चरण 1: पदबंध को उपवाक्य बनाइए मूल वाक्य में वस्तुओं और सेवाओं को खरीदने वाला एक पदबंध है। इसे जो वस्तुओं और सेवाओं को खरीदता है के रूप में लिखने पर इसमें खरीदता है क्रिया आ जाती है और यह आश्रित उपवाक्य बन जाता है। जो शब्द आगे आने वाले वह से संबंधित है।

चरण 2: प्रधान उपवाक्य जोड़िए वह उपभोक्ता कहलाता है प्रधान उपवाक्य है। इसे आश्रित उपवाक्य के साथ जोड़ने पर वाक्य मिश्र हो जाता है। खरीदने वाले व्यक्ति के लिए उपभोक्ता कहलाने का मूल अर्थ बना रहता है और अनावश्यक नई सूचना भी नहीं जुड़ती।

चरण 3: निष्कर्ष जो वस्तुओं और सेवाओं को खरीदता है, वह उपभोक्ता कहलाता है।

त्वरित सुझाव: खरीदने वाला पदबंध को जो खरीदता है में बदलकर उससे वह वाला प्रधान उपवाक्य जोड़िए।

3(क). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए : अतिथि : देवता या समस्या [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निबन्ध में भूमिका, विषय का विवेचन और संतुलित उपसंहार होना चाहिए।
- अतिथि-सत्कार की सांस्कृतिक भावना को आधुनिक जीवन की व्यावहारिक परिस्थितियों से जोड़ना है।

चरण 1: विषय की रूपरेखा बनाइए शीर्षक के बाद भारतीय आतिथ्य-परंपरा से भूमिका आरंभ करें। मुख्य भाग में अतिथि के आगमन से मिलने वाले आनंद तथा संबंधों की निकटता का उल्लेख करें। इसके बाद बिना सूचना आए या लंबे समय तक रुके अतिथि से होने वाली कठिनाइयों को स्पष्ट करें। अंत में मेजबान की उदारता और अतिथि के संयम को समाधान के रूप में प्रस्तुत करें।

चरण 2: पूर्ण निबन्ध अतिथि : देवता या समस्या

भारतीय संस्कृति में अतिथि का स्वागत बड़े आदर से किया जाता है। अतिथि देवो भव की भावना हमें सिखाती है कि घर आए व्यक्ति को प्रेम, सम्मान और सहयोग देना हमारा कर्तव्य है। अतिथि केवल भोजन करने वाला व्यक्ति नहीं, बल्कि आत्मीय संबंधों को सजीव बनाने वाला माध्यम भी है। उसके आने से घर में प्रसन्नता आती है और रोज़मर्रा की एकरसता टूटती है।

दूर रहने वाले संबंधी या मित्र जब मिलने आते हैं, तो अनुभवों और स्मृतियों का आदान-प्रदान होता है। बच्चों को रिश्तों की पहचान मिलती है और बड़ों को अपनापन अनुभव होता है। संकट के समय किसी परिचित को आश्रय देना मानवीय संवेदना का प्रमाण है। अतिथि-सत्कार का मूल्य इसी आत्मीयता में है, महँगे भोजन और दिखावे में नहीं।

परंतु आज की परिस्थितियाँ पहले जैसी नहीं हैं। नगरों में छोटे मकान, सीमित आय और कामकाजी जीवन के कारण समय तथा साधनों की कमी रहती है। ऐसे में बिना सूचना आए और लंबे समय तक रुकने वाले अतिथि परिवार की दिनचर्या को प्रभावित कर सकते हैं। बच्चों की पढ़ाई, कार्यालय का काम और घर का बजट बिगड़ सकता है। यदि अतिथि हर समय विशेष सेवा की अपेक्षा करे, तो स्वागत की प्रसन्नता बोझ में बदल जाती है।

इस समस्या का समाधान आतिथ्य की परंपरा को त्यागना नहीं, बल्कि उसे विवेकपूर्ण बनाना है। अतिथि को आने से पहले सूचना देनी चाहिए, ठहरने की अवधि स्पष्ट करनी चाहिए और मेजबान की सीमाओं का ध्यान रखना चाहिए। घर के छोटे कामों में सहयोग तथा अनावश्यक माँगों से बचना उसके सौजन्य को दिखाता है। मेजबान भी बनावटी प्रदर्शन छोड़कर अपनी सामर्थ्य के अनुसार सादगी से स्वागत करे।

अत: अतिथि अपने आप में समस्या नहीं है। समस्या तब जन्म लेती है जब आत्मीयता का स्थान अधिकार-भाव और असंवेदनशीलता ले लेते हैं। परस्पर सम्मान, संयम और सहयोग बने रहें तो अतिथि आज भी घर में आनंद लाने वाला देवता बन सकता है।

चरण 3: निष्कर्ष अतिथि-सत्कार की श्रेष्ठ परंपरा तभी सुखद रहती है जब मेजबान आत्मीयता और अतिथि मर्यादा का पालन करे।

त्वरित सुझाव: निबन्ध को केवल अतिथि की शिकायत न बनाइए; परंपरा, कठिनाई और व्यावहारिक समाधान तीनों रखिए।

3(ख). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए : मेरा प्रिय खेल – क्रिकेट [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निबंध में अपने प्रिय खेल का परिचय, उसके नियम, उससे मिलने वाले आनंद और उसके महत्त्व को क्रमबद्ध रूप में व्यक्त किया जाता है। व्यक्तिगत पसंद के साथ उसके ठोस कारण भी देना आवश्यक है।
- क्रिकेट पर लिखते समय टीम भावना, अनुशासन, परिश्रम और स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को खेल के अनुभव से जोड़ना विषय को सार्थक बनाता है।

चरण 1: रूपरेखा और विषय का विस्तार प्रस्तावना में क्रिकेट के प्रति रुचि व्यक्त करेंगे। मुख्य भाग में खेल की सामान्य रूपरेखा, खेलने का अनुभव और उससे मिलने वाली सीख बताएँगे। उपसंहार में खेल तथा पढ़ाई के बीच संतुलन पर बल देंगे। किसी प्रतियोगिता का अप्रमाणित आँकड़ा देने के स्थान पर अपने अनुभव को आधार बनाएँगे।

चरण 2: पूर्ण आदर्श निबंध मेरा प्रिय खेल – क्रिकेट

खेल जीवन में उत्साह और स्फूर्ति भरते हैं। वे शरीर को स्वस्थ रखने के साथ मन को भी प्रसन्न करते हैं। मुझे अनेक खेल अच्छे लगते हैं, लेकिन क्रिकेट मेरा प्रिय खेल है। बल्ले और गेंद के बीच होने वाला संघर्ष, क्षेत्ररक्षकों की तत्परता और अंतिम क्षण तक बनी रहने वाली अनिश्चितता मुझे विशेष रूप से आकर्षित करती है।

क्रिकेट दो टीमों के बीच खेला जाता है। प्रत्येक टीम में ग्यारह खिलाड़ी होते हैं। एक टीम बल्लेबाजी करके रन बनाती है और दूसरी गेंदबाजी तथा क्षेत्ररक्षण करके उसे रोकने का प्रयास करती है। जीत के लिए केवल अच्छे बल्लेबाज या तेज गेंदबाज होना पर्याप्त नहीं है; पूरी

टीम का मिलकर खेलना आवश्यक है। कभी सावधानी से खेलना पड़ता है और कभी परिस्थिति देखकर जोखिम उठाना पड़ता है। यही विविधता इस खेल को रोचक बनाती है।

मैं खाली समय में अपने मित्रों के साथ क्रिकेट खेलता हूँ। मुझे बल्लेबाजी के साथ क्षेत्ररक्षण भी पसंद है। किसी कठिन गेंद को रोकना या कैच पकड़ना उतना ही आनंद देता है जितना चौका लगाना। खेलते समय हम अपने विवाद बातचीत से सुलझाते हैं और निर्णय का सम्मान करते हैं। इससे धैर्य और आत्मसंयम का अभ्यास होता है।

क्रिकेट मुझे सिखाता है कि सफलता नियमित अभ्यास, सहयोग और एकाग्रता से मिलती है। हार जाने पर निराश होकर दूसरों को दोष देना उचित नहीं है। अपनी भूल पहचानकर अगली बार बेहतर प्रयास करना चाहिए। किसी साथी से गलती हो जाए तो उसका उत्साह बढ़ाना भी टीम के प्रत्येक सदस्य का दायित्व है।

फिर भी खेल का आनंद तभी उपयोगी है जब पढ़ाई और अन्य जिम्मेदारियों की उपेक्षा न हो। केवल दूसरों का मैच देखने की अपेक्षा स्वयं मैदान में खेलना अधिक लाभकारी है। मेरे लिए क्रिकेट मनोरंजन के साथ जीवन की अच्छी आदतें सीखने का माध्यम है। इसलिए यह मेरा प्रिय खेल है।

चरण 3: निष्कर्ष क्रिकेट मेरा प्रिय खेल है, क्योंकि वह आनंद और शारीरिक सक्रियता के साथ सहयोग, धैर्य, अनुशासन और पराजय से सीखने की प्रेरणा देता है।

त्वरित सुझाव: इस विषय में खेल के नियमों की लंबी सूची के स्थान पर अपनी पसंद के कारण और खेल से सीखे जीवनमूल्य उदाहरण सहित लिखें।

3(ग). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए : बदलता युग – बदलती मान्यताएँ [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विचारात्मक निबंध में सामाजिक परिवर्तन के कारण, उसके प्रभाव और उसके मूल्यांकन को उदाहरणों के साथ प्रस्तुत किया जाता है। विषय के दोनों पक्ष देखकर संतुलित मत स्थापित करना चाहिए।
- मान्यताएँ समाज की स्वीकृत धारणाएँ हैं। बदलती परिस्थितियों में उनकी उपयोगिता की परीक्षा आवश्यक है; समानता, करुणा और सत्य जैसे मूल्यों को विवेकपूर्ण परिवर्तन से जोड़ा जा सकता है।

चरण 1: रूपरेखा और विषय का विस्तार भूमिका में युग और मान्यताओं के संबंध को स्पष्ट करेंगे। मुख्य भाग में विज्ञान, शिक्षा, परिवार और स्त्री की स्थिति से जुड़े परिवर्तन बताएँगे। फिर परिवर्तन के लाभ और चुनौतियों पर विचार करके मानवीय मूल्यों पर आधारित निष्कर्ष देंगे। किसी पूरी पीढ़ी को अच्छा या बुरा घोषित करने से बचेंगे।

चरण 2: पूर्ण आदर्श निबंध बदलता युग – बदलती मान्यताएँ

समय निरंतर परिवर्तनशील है। मनुष्य की जीवनस्थितियाँ बदलती हैं तो उसकी सोच और सामाजिक मान्यताएँ भी बदलती हैं। जो धारणा किसी पुराने समय में सर्वमान्य थी, नई परिस्थितियों में उस पर प्रश्न उठ सकते हैं। इस प्रकार बदलता युग हमारी मान्यताओं की परीक्षा भी लेता है और उन्हें नया रूप भी देता है।

विज्ञान और तकनीक ने इस परिवर्तन को गति दी है। संचार के साधनों ने दूरियों को कम किया है और विभिन्न समाजों के विचार हमारे सामने पहुँचाए हैं। शिक्षा के प्रसार से लोग परंपराओं को केवल इसलिए स्वीकार नहीं करते कि वे बहुत पुरानी हैं। वे उनके पीछे के तर्क और सामाजिक प्रभाव को समझना चाहते हैं। अंधविश्वासों और भेदभावपूर्ण प्रथाओं के विरुद्ध प्रश्न उठना इसी जागरूकता का परिणाम है।

स्त्रियों के संबंध में मान्यताओं में आया बदलाव इसका महत्त्वपूर्ण उदाहरण है। शिक्षा और काम के अवसरों पर उनका समान अधिकार अधिक स्पष्ट रूप से स्वीकार किया जा रहा है। परिवार और समाज के निर्णयों में उनकी भागीदारी बढ़ने की अपेक्षा भी मजबूत हुई है। जाति, पेशे और जन्म के आधार पर मनुष्य का मूल्य आँकने वाली धारणाओं को चुनौती देना भी अधिक न्यायपूर्ण समाज की दिशा में आवश्यक कदम है।

परिवर्तन के सामने कुछ चुनौतियाँ भी हैं। तीव्र प्रतिस्पर्धा और उपभोक्तावादी सोच कभी-कभी संबंधों को स्वार्थ तक सीमित कर देती है।

दिखावे को प्रतिष्ठा और धन को सफलता का एकमात्र मापदंड मानना उचित नहीं है। नई पीढ़ी की स्वतंत्रता का सम्मान करते हुए बुजुर्गों के अनुभव और भावनाओं को भी स्थान मिलना चाहिए। संवाद के अभाव में पीढ़ियों का अंतर टकराव का कारण बन सकता है।

इसलिए प्रत्येक पुरानी मान्यता को त्याग देना और प्रत्येक नई धारणा को तुरंत स्वीकार कर लेना, दोनों ही अविवेकपूर्ण हैं। हमें तर्क, अनुभव और मानवीय गरिमा की कसौटी पर उनका मूल्यांकन करना चाहिए। सत्य, करुणा, ईमानदारी और परस्पर सम्मान किसी भी युग में आवश्यक हैं। बदलते समय के साथ इन मूल्यों को नए व्यवहार में ढालना ही स्वस्थ प्रगति है।

चरण 3: निष्कर्ष बदलते युग में मान्यताओं का बदलना स्वाभाविक है। उपयोगी परिवर्तन को अपनाते हुए समानता, विवेक और मानवीय संवेदना को बनाए रखना चाहिए।

त्वरित सुझाव: इस निबंध में शिक्षा, स्त्री-समानता और पारिवारिक संबंधों के उदाहरण देकर हर परिवर्तन को विवेक तथा मानवीय गरिमा की कसौटी पर परखें।

3(घ). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए : क्या नहीं कर सकती नारी [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निबंध में भूमिका, विचारों का क्रमबद्ध विस्तार और निष्कर्ष प्रस्तुत किया जाता है। तर्क उदाहरणों से पुष्ट होने चाहिए।
- विषय का केंद्रीय विचार नारी की क्षमता, उपलब्धियाँ और समान अवसरों की आवश्यकता है। सामाजिक बाधाओं तथा उनके समाधान पर भी विचार आवश्यक है।

चरण 1: विषय की रूपरेखा बनाएँ भूमिका में नारी की संभावनाएँ बताएँ। विस्तार में परिवार, शिक्षा, विज्ञान, प्रशासन और खेलों में योगदान समझाएँ। सामाजिक बाधाओं तथा समान अवसरों की चर्चा करें। अंत में सम्मान, अधिकार और सहयोग का संदेश दें।

चरण 2: पूर्ण आदर्श निबंध **क्या नहीं कर सकती नारी**

नारी मानव समाज की समान भागीदार है। उसमें संवेदना भी है और साहस भी, सृजन की शक्ति भी है और संघर्ष का धैर्य भी। इसलिए प्रश्न यह नहीं कि नारी क्या कर सकती है, बल्कि यह है कि अवसर मिलने पर वह क्या नहीं कर सकती! उसकी क्षमताओं को सीमित मानना समाज की संकीर्ण दृष्टि का परिचायक है।

परिवार में माँ, बहन, बेटी और जीवनसंगिनी के रूप में नारी का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। वह बच्चों में संस्कार जगाती है, परिवार को भावनात्मक आधार देती है और कठिन परिस्थितियों में संबल बनती है। किंतु उसकी पहचान केवल पारिवारिक भूमिकाओं तक सीमित नहीं है। शिक्षा और आत्मनिर्भरता ने उसके कार्यक्षेत्र को व्यापक बनाया है।

इतिहास और वर्तमान दोनों उसकी योग्यता के साक्षी हैं। रानी लक्ष्मीबाई का पराक्रम, सावित्रीबाई फुले का शिक्षा के लिए संघर्ष, कल्पना चावला की अंतरिक्ष-यात्रा और मैरी कॉम की खेल उपलब्धियाँ बताती हैं कि संकल्प के सामने कठिनाइयाँ छोटी पड़ जाती हैं। आज महिलाएँ चिकित्सक, वैज्ञानिक, शिक्षक, उद्यमी, प्रशासक और सैनिक बनकर देश की प्रगति में योगदान दे रही हैं। गाँवों में खेतों से लेकर स्थानीय स्वशासन तक उनकी सक्रियता समाज को बदल रही है।

फिर भी अनेक बालिकाएँ भेदभाव, बाल-विवाह, शिक्षा के अभाव और असुरक्षा का सामना करती हैं। घरेलू दायित्वों का असमान बोझ भी उनकी प्रगति रोकता है। ये बाधाएँ उनकी क्षमता की कमी नहीं, समाज की व्यवस्था की कमियाँ हैं। बेटियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, पोषण, सुरक्षित वातावरण और निर्णय लेने की स्वतंत्रता देना आवश्यक है। घर के कामों में समान सहभागिता और कार्यस्थल पर सम्मान भी उतने ही आवश्यक हैं।

नारी को देवी कहकर ऊँचा आसन देना पर्याप्त नहीं; उसे मनुष्य के रूप में समान अधिकार और अवसर देना होगा। स्त्री और पुरुष के सहयोग से ही स्वस्थ समाज बनेगा। जब नारी को अपनी प्रतिभा विकसित करने की स्वतंत्रता मिलेगी, तब उसकी उपलब्धियाँ स्वयं उत्तर देंगी कि ऐसा कौन-सा क्षेत्र है जिसमें वह आगे नहीं बढ़ सकती।

चरण 3: निष्कर्ष नारी की बहुआयामी क्षमता के विकास के लिए समान शिक्षा, अधिकार, सुरक्षा तथा अवसर आवश्यक हैं।

त्वरित सुझाव: उपलब्धियों के ठोस उदाहरण दें और हर बाधा के साथ उसका व्यावहारिक समाधान जोड़ें; केवल प्रशंसात्मक विशेषणों पर निर्भर न रहें।

4. सड़क पर आपके साथ हुई दुर्घटना और वहाँ खड़ी पुलिस का असहयोग पाकर आपने थाने में रिपोर्ट लिखानी चाही, किन्तु नहीं लिखी गई । विवरण-सहित इसकी शिकायत करते हुए पुलिस आयुक्त को पत्र लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शिकायत-पत्र में घटना का स्थान, समय, क्रम और संबंधित अधिकारियों का व्यवहार तथ्यपूर्ण तथा शिष्ट भाषा में बताया जाता है। अंत में स्पष्ट कार्रवाई का अनुरोध आवश्यक है।
- औपचारिक पत्र में प्रेषक का पता, दिनांक, प्राप्तकर्ता का पद-पता, विषय, संबोधन, मुख्य विवरण, समापन और हस्ताक्षर का क्रम रखा जाता है।

चरण 1: प्रारूप और सामग्री की योजना पुलिस आयुक्त को संबोधित पत्र लिखें। दुर्घटना, मौके पर पुलिस से सहायता माँगने, उसके असहयोग और थाने में शिकायत दर्ज न होने का विवरण क्रम से दें। जिम्मेदार कर्मचारियों की जाँच, शिकायत दर्ज करने तथा दुर्घटना के लिए उत्तरदायी वाहन चालक के विरुद्ध कार्रवाई की माँग करें। आरोपों को अनावश्यक भावुकता से बचाकर जाँच योग्य तथ्यों के रूप में प्रस्तुत करें।

चरण 2: पूर्ण आदर्श शिकायत-पत्र 24, विकास नगर
नई दिल्ली
20 मार्च, 2015
सेवा में,
पुलिस आयुक्त महोदय
दिल्ली पुलिस मुख्यालय
नई दिल्ली

विषय: सड़क दुर्घटना में पुलिस के असहयोग तथा थाने में रिपोर्ट दर्ज न किए जाने की शिकायत।

महोदय,

सविनय निवेदन है कि 19 मार्च, 2015 को प्रातः लगभग 9 बजे मैं विकास नगर के मुख्य चौराहे पर निर्धारित स्थान से सड़क पार कर रहा था। तभी लाल बत्ती का उल्लंघन करते हुए आए एक मोटरसाइकिल चालक ने मुझे टक्कर मार दी। मेरे हाथ और पैर में चोटें आईं तथा मेरा चश्मा टूट गया। चालक बिना रुके वहाँ से चला गया। मैंने उसकी गाड़ी का नंबर लिख लिया, जिसे जाँच अधिकारी को उपलब्ध करा सकता हूँ।

चौराहे पर उपस्थित पुलिसकर्मियों से मैंने सहायता माँगी, किंतु उन्होंने न तो चालक को रोकने का प्रयास किया, न मुझे उपचार के लिए भेजने की व्यवस्था की। उन्होंने मुझे स्वयं थाने जाने को कह दिया। कुछ राहगीरों ने मुझे पास के अस्पताल पहुँचाया, जहाँ प्राथमिक उपचार हुआ।

उपचार के बाद मैं लगभग 11 बजे स्थानीय थाने पहुँचा। मैंने ड्यूटी पर उपस्थित अधिकारी को घटना का पूरा विवरण दिया और लिखित शिकायत भी प्रस्तुत की। इसके बावजूद उन्होंने मेरी रिपोर्ट दर्ज नहीं की तथा मुझे बाद में आने को कहकर लौटा दिया। दुर्घटना में घायल नागरिक के प्रति ऐसा व्यवहार अत्यंत निराशाजनक है।

आपसे अनुरोध है कि मेरी शिकायत दर्ज करवाकर दुर्घटना की निष्पक्ष जाँच कराएँ। चौराहे के कैमरों के उपलब्ध फुटेज और प्रत्यक्षदर्शियों के बयान से तथ्य सत्यापित किए जा सकते हैं। साथ ही संबंधित पुलिसकर्मियों के असहयोग की जाँच कर उचित कार्रवाई करें, ताकि नागरिकों को समय पर सहायता और न्याय मिल सके।

धन्यवाद।

भवदीय
अमित कुमार
संलग्नक: लिखित शिकायत तथा उपचार-पर्ची की प्रतियाँ।

चरण 3: निष्कर्ष पत्र में दुर्घटना और पुलिस के असहयोग का क्रमबद्ध विवरण देकर रिपोर्ट दर्ज करने, घटना की जाँच और उत्तरदायी कर्मचारियों पर उचित कार्रवाई का निवेदन किया गया है।

त्वरित सुझाव: शिकायत में दुर्घटना तथा थाने के असहयोग दोनों का उल्लेख करें और अंत में आयुक्त से अपेक्षित ठोस कार्रवाई स्पष्ट लिखें।

अथवा

4. भाँति-भाँति के अंधविश्वास और भ्रांतियाँ फैलाने में टी.वी. माध्यमों के इस्तेमाल पर हस्तक्षेप कर उन्हें रुकवाने के दिशा-निर्देश जारी करने के लिए भारत सरकार के सूचना और प्रसारण मंत्री को पत्र लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- औपचारिक पत्र में प्रेषक का पता, दिनांक, प्राप्तकर्ता का पद और पता, विषय, संबोधन, मुख्य कथ्य तथा समापन क्रम से लिखे जाते हैं। भाषा विनम्र, स्पष्ट और तथ्यपरक रहती है।
- इस पत्र का उद्देश्य टी.वी. पर अंधविश्वास फैलाने वाली सामग्री के सामाजिक दुष्प्रभाव बताकर सूचना और प्रसारण मंत्री से प्रभावी दिशा-निर्देश जारी करने का अनुरोध करना है।

चरण 1: विषय और कथ्य की योजना बनाइए विषय में अंधविश्वास फैलाने वाले टी.वी. कार्यक्रमों पर रोक के लिए दिशा-निर्देशों की माँग स्पष्ट करें। मुख्य भाग में पहले समस्या बताएँ, फिर बच्चों और सामान्य दर्शकों पर उसके प्रभाव रखें तथा अंत में निगरानी, शिकायत-व्यवस्था और वैज्ञानिक चेतना बढ़ाने के उपाय सुझाएँ। किसी चैनल पर अप्रमाणित व्यक्तिगत आरोप लगाने के बजाय भ्रामक दावों की प्रवृत्ति पर ध्यान दें।

चरण 2: पूर्ण औपचारिक पत्र लिखिए 24, विकास नगर
नई दिल्ली
15 मार्च, 2015
सेवा में,
माननीय सूचना और प्रसारण मंत्री महोदय
भारत सरकार
नई दिल्ली

विषय: टी.वी. पर अंधविश्वास और भ्रांतियाँ फैलाने वाली सामग्री रोकने हेतु दिशा-निर्देश जारी करने का अनुरोध।

महोदय,

मैं आपका ध्यान विभिन्न टी.वी. माध्यमों में प्रसारित उन कार्यक्रमों और विज्ञापनों की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ, जिनमें चमत्कारी वस्तुओं, तंत्र-मंत्र तथा अवैज्ञानिक उपायों से रोग, बेरोजगारी और पारिवारिक समस्याएँ दूर करने के दावे किए जाते हैं। दृश्य और ध्वनि के प्रभाव के कारण अनेक दर्शक इन दावों को सच मान लेते हैं।

ऐसी सामग्री लोगों में भय और भ्रम पैदा करती है। आर्थिक रूप से कमजोर परिवार झूठे आश्वासनों पर धन खर्च कर देते हैं और कुछ रोगी उचित चिकित्सा लेने में देर करते हैं। बच्चों में तर्कशील सोच विकसित होने के स्थान पर अंधविश्वास पनपने लगता है।

अतः आपसे अनुरोध है कि ऐसे भ्रामक दावों की जाँच और प्रसारण रोकने के लिए स्पष्ट दिशा-निर्देश जारी किए जाएँ। चैनलों को विज्ञापनों की सत्यता जाँचने के लिए उत्तरदायी बनाया जाए। दर्शकों की शिकायतों पर समयबद्ध कार्रवाई हो तथा नियमों का उल्लंघन करने वालों पर उचित कार्रवाई की जाए। साथ ही, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और जनजागरूकता बढ़ाने वाले कार्यक्रमों को प्रोत्साहन दिया जाए।

आशा है कि आपका मंत्रालय जनहित में शीघ्र प्रभावी कदम उठाएगा।

धन्यवाद।
भवदीय
अरुण कुमार
जागरूक नागरिक

चरण 3: निष्कर्ष यह पत्र समस्या, उसके सामाजिक प्रभाव और व्यावहारिक सुधार-सुझाव प्रस्तुत करते हुए संबंधित मंत्री से स्पष्ट हस्तक्षेप की माँग करता है। विनम्र संबोधन तथा संपूर्ण औपचारिक प्रारूप इसके उद्देश्य को प्रभावी बनाते हैं।

त्वरित सुझाव: मंत्री को लिखते समय विषय में अपेक्षित कार्रवाई स्पष्ट करें और मुख्य भाग में समस्या, दुष्प्रभाव तथा ठोस सुझाव इसी क्रम में रखें।

5. 'सामाजिक सुरक्षा' पर एक आलेख लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलेख किसी विषय का तर्कपूर्ण और क्रमबद्ध विवेचन है। इसमें आकर्षक शीर्षक, लेखक का नाम, विषय का परिचय, समस्या का विश्लेषण, समाधान और सार्थक समापन होता है।
- सामाजिक सुरक्षा का उद्देश्य बीमारी, बेरोजगारी, दुर्घटना, वृद्धावस्था और असहायता जैसी स्थितियों में व्यक्ति के जीवन तथा सम्मान की रक्षा करना है। यह दया के बजाय मानवीय गरिमा और सामाजिक उत्तरदायित्व से जुड़ा विषय है।

चरण 1: आलेख की रूपरेखा बनाइए पहले सामाजिक सुरक्षा का अर्थ स्पष्ट करें। फिर उन परिस्थितियों और वर्गों का उल्लेख करें जिन्हें सहायता की अधिक जरूरत होती है। इसके बाद सरकारी व्यवस्था, समाज और नागरिकों की भूमिका बताएँ। समापन में यह विचार रखें कि जरूरतमंद व्यक्ति का सम्मान बनाए रखते हुए सहायता पहुँचाना ही सच्ची सामाजिक सुरक्षा है। विषय को केवल अपराधों से रक्षा तक सीमित न रखें; आर्थिक और स्वास्थ्य-संबंधी असुरक्षा भी इसमें शामिल है।

चरण 2: पूर्ण आलेख प्रस्तुत कीजिए **सामाजिक सुरक्षा: सम्मानपूर्ण जीवन का आधार**

लेखक: अरुण कुमार

किसी समाज की प्रगति केवल ऊँची इमारतों और बढ़ती आय से नहीं आँकी जा सकती। उसकी वास्तविक पहचान इस बात से होती है कि वह अपने कमजोर, वृद्ध, बीमार और असहाय सदस्यों को कितना सुरक्षित जीवन देता है। सामाजिक सुरक्षा वह व्यवस्था है जो कठिन परिस्थितियों में व्यक्ति को अकेला पड़ने से बचाती है।

बीमारी, दुर्घटना या रोजगार छिन जाने से परिवार की आय अचानक समाप्त हो सकती है। वृद्धावस्था में नियमित आय और देखभाल की जरूरत बढ़ जाती है। असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों, दिव्यांग व्यक्तियों तथा निराश्रित बच्चों के सामने असुरक्षा की चुनौती और भी गंभीर है। ऐसे समय भोजन, आवास, शिक्षा और चिकित्सा की उपलब्धता जीवन का आवश्यक सहारा बनती है।

सरकार को सुलभ स्वास्थ्य सेवाओं, वृद्धावस्था पेंशन, श्रमिक कल्याण तथा जरूरतमंद परिवारों की सहायता की व्यवस्थाओं को प्रभावी बनाना चाहिए। योजनाओं की जानकारी सरल भाषा में दी जाए और लाभ पाने की प्रक्रिया सुगम हो। पारदर्शिता तथा जवाबदेही से यह सुनिश्चित किया जा सकता है कि सहायता वास्तविक पात्रों तक पहुँचे।

समाज की भूमिका भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। पड़ोस में अकेले रह रहे बुजुर्ग की सहायता करना, संकटग्रस्त परिवार का साथ देना और भेदभाव का विरोध करना नागरिक जिम्मेदारी है। संस्थाएँ सुरक्षित कार्यस्थल और श्रमिकों के उचित अधिकार सुनिश्चित करें।

सामाजिक सुरक्षा किसी पर उपकार नहीं, सम्मानपूर्ण जीवन की आधारशिला है। जब व्यक्ति को कठिन समय में सहारे का भरोसा मिलता है, तब वह अधिक आत्मविश्वास से काम करता है। सरकार, समाज और नागरिकों के साझा प्रयास ही एक संवेदनशील तथा समावेशी राष्ट्र बना सकते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष आलेख सामाजिक सुरक्षा का अर्थ, उसकी आवश्यकता, प्रमुख उपाय और सामूहिक जिम्मेदारी स्पष्ट करता है। उसका केंद्रीय संदेश है कि संकट में सहारा और गरिमा की रक्षा प्रत्येक व्यक्ति के लिए उपलब्ध होनी चाहिए।

त्वरित सुझाव: सामाजिक सुरक्षा पर लिखते समय बीमारी, बेरोजगारी और वृद्धावस्था के उदाहरण जोड़ें; फिर प्रत्येक समस्या को एक ठोस सहायता-उपाय से जोड़कर आलेख पूरा करें।

अथवा

5. 'राष्ट्रीय एकता' पर एक आलेख लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलेख किसी विषय का तथ्यपूर्ण, क्रमबद्ध और विचारप्रधान विवेचन होता है। उपयुक्त शीर्षक तथा लेखक का नाम उसके प्रारूप के प्रमुख अंग हैं।

- राष्ट्रीय एकता का अर्थ विविध भाषाओं, धर्मों और संस्कृतियों के लोगों का समान नागरिकता एवं साझे राष्ट्रीय हितों के आधार पर जुड़ना है।

चरण 1: प्रारूप और विषय-योजना शीर्षक के बाद लेखक का नाम दें। भूमिका में भारत की विविधता का उल्लेख करें। फिर एकता का आधार, उसके सामने उपस्थित चुनौतियाँ और नागरिकों के कर्तव्य स्पष्ट करें। अंत में सहिष्णुता, समान अवसर और सहयोग का संदेश दें। भाषा विचारपूर्ण तथा अनुच्छेद परस्पर संबद्ध होने चाहिए।

चरण 2: पूर्ण आदर्श आलेख **राष्ट्रीय एकता : विविधता में साझी पहचान**

लेखक : क ख ग

भारत अनेक भाषाओं, धर्मों, वेशभूषाओं और परंपराओं का देश है। यहाँ की विविधता हमारी सांस्कृतिक संपदा है। इन भिन्नताओं के बीच एक राष्ट्र के रूप में जुड़कर रहना ही राष्ट्रीय एकता है। इसका अर्थ सबको एक जैसा बनाना नहीं, बल्कि सभी की पहचान का सम्मान करते हुए देश के प्रति साझा जिम्मेदारी निभाना है।

हमारा संविधान समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व के आदर्शों से नागरिकों को जोड़ता है। स्वतंत्रता संग्राम में विभिन्न क्षेत्रों और समुदायों के लोगों ने मिलकर संघर्ष किया था। आज भी खेल, साहित्य, विज्ञान और सार्वजनिक सेवा में सामूहिक उपलब्धियाँ हमें एकता का अनुभव कराती हैं। किसी आपदा में दूसरे प्रदेश के लोगों की सहायता करना इसी राष्ट्रीय भावना की अभिव्यक्ति है।

फिर भी सांप्रदायिकता, जातिगत भेदभाव, संकीर्ण क्षेत्रवाद और आर्थिक विषमता एकता को कमजोर करते हैं। अफवाहों और घृणापूर्ण संदेशों से अविश्वास फैलता है। इसलिए किसी सूचना को साझा करने से पहले उसकी सत्यता जाँचना और दूसरों के प्रति संवेदनशील रहना आवश्यक है।

विद्यालयों में विभिन्न प्रदेशों की संस्कृति से परिचय, मातृभाषा के साथ अन्य भाषाओं का सम्मान तथा समान अवसरों का विस्तार एकता को मजबूत कर सकते हैं। नागरिकों को अपने अधिकारों के साथ कर्तव्यों का भी ध्यान रखना चाहिए। राष्ट्रीय एकता नारों से आगे बढ़कर रोजमर्रा के व्यवहार में प्रकट होती है। जब हम भेदभाव छोड़कर न्याय, सहयोग और बंधुत्व अपनाते हैं, तभी एक सशक्त भारत का निर्माण होता है।

चरण 3: निष्कर्ष आलेख राष्ट्रीय एकता का अर्थ स्पष्ट करते हुए उसकी आवश्यकता, चुनौतियों तथा समाधान का क्रमबद्ध विवेचन करता है।

त्वरित सुझाव: पहले विविधता और एकता का संबंध स्पष्ट करें, फिर चुनौतियों के साथ ठोस उपाय दें; केवल देशभक्ति के नारे न लिखें।

6(क). निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए :

अंशकालिक पत्रकार से आप क्या समझते हैं ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पत्रकारों का वर्गीकरण उनके काम करने की व्यवस्था के आधार पर भी किया जाता है।
- अंशकालिक पत्रकार किसी समाचार-संस्था का नियमित पूर्णकालिक कर्मचारी नहीं होता।

चरण 1: कार्य की प्रकृति पहचानें अंशकालिक पत्रकार सीमित समय देकर या आवश्यकतानुसार किसी समाचार-पत्र अथवा अन्य समाचार-संस्था के लिए समाचार जुटाता और भेजता है। उसका पत्रकारिता का कार्य पूर्णकालिक नियुक्ति के रूप में नहीं होता।

चरण 2: पारिश्रमिक और संबद्धता समझें उसे सामान्यतः प्रकाशित समाचार या निर्धारित कार्य के आधार पर पारिश्रमिक मिलता है। किसी स्थान से समाचार भेजने वाले ऐसे पत्रकार को स्ट्रिंगर भी कहा जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष अंशकालिक पत्रकार वह है जो किसी समाचार-संस्था के लिए नियमित पूर्णकालिक कर्मचारी बने बिना आंशिक समय में समाचार-संकलन और प्रेषण का काम करता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में सीमित समय और गैर-पूर्णकालिक संबद्धता अवश्य लिखें; केवल समाचार भेजने वाला कहना पर्याप्त नहीं है।

6(ख). निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए :

पेज थ्री पत्रकारिता क्या है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पेज थ्री पत्रकारिता का संबंध चर्चित व्यक्तियों की सामाजिक जीवनशैली से है।
- इसमें मनोरंजन, फैशन, पार्टियों और सामाजिक समारोहों की सचित्र सामग्री प्रमुख रहती है।

चरण 1: विषयवस्तु पहचानें फिल्मी सितारों, फैशन जगत की हस्तियों और उच्चवर्गीय समाज के लोगों की पार्टियों, निजी जीवन तथा सामाजिक आयोजनों की खबरें इसका मुख्य विषय होती हैं।

चरण 2: नाम का आशय समझें ऐसी हल्की-फुल्की और आकर्षक सचित्र सामग्री समाचार-पत्रों के प्राय: तीसरे पृष्ठ पर छपने के कारण पेज थ्री पत्रकारिता कही जाने लगी। इसका आशय तीसरे पृष्ठ पर छपी प्रत्येक खबर नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष चर्चित हस्तियों की जीवनशैली, पार्टियों, फैशन और सामाजिक समारोहों से जुड़ी सचित्र खबरों को पेज थ्री पत्रकारिता कहते हैं।

त्वरित सुझाव: पेज थ्री की परिभाषा में चर्चित हस्तियाँ तथा उनकी जीवनशैली लिखें; केवल पृष्ठ संख्या बताकर उत्तर पूरा न करें।

6(ग). निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए :

जनसंचार का तात्पर्य स्पष्ट कीजिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संचार का अर्थ विचारों, सूचनाओं और संदेशों का आदान-प्रदान है।
- जनसंचार में संदेश व्यापक, विविध और बिखरे हुए जनसमूह तक किसी माध्यम से पहुँचता है।

चरण 1: प्राप्तकर्ताओं का स्वरूप बताइए जनसंचार का लक्ष्य किसी एक परिचित व्यक्ति से संवाद करना नहीं, बल्कि बड़ी संख्या में लोगों तक एक साथ सूचना पहुँचाना होता है। ये लोग अलग-अलग स्थानों और सामाजिक समूहों के हो सकते हैं।

चरण 2: माध्यमों से स्पष्ट कीजिए समाचार-पत्र, रेडियो, टेलीविजन और इंटरनेट जैसे माध्यम जनसंचार के उदाहरण हैं। इनके द्वारा सूचना, विचार और मनोरंजन व्यापक जनता तक पहुँचते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष संचार-माध्यमों द्वारा सूचनाओं, विचारों और संदेशों को व्यापक तथा बिखरे हुए जनसमूह तक पहुँचाने की प्रक्रिया जनसंचार कहलाती है।

त्वरित सुझाव: परिभाषा में व्यापक जनसमूह और संचार-माध्यम दोनों रखें; आमने-सामने की निजी बातचीत से इसका अंतर स्पष्ट होगा।

6(घ). निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए :

आल इंडिया रेडियो की स्थापना कब हुई ? आजकल यह किस संस्था के अंतर्गत है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आल इंडिया रेडियो का इतिहास और उसका संस्थागत संचालन इस प्रश्न के दो अलग तथ्य हैं।
- आकाशवाणी भारत की सार्वजनिक रेडियो प्रसारण सेवा है।

चरण 1: स्थापना की तिथि बताइए 8 जून 1936 को भारतीय राज्य प्रसारण सेवा का नाम आल इंडिया रेडियो रखा गया। आल इंडिया रेडियो की स्थापना के उत्तर में यही तिथि लिखी जाती है।

चरण 2: वर्तमान संस्था का नाम बताइए आल इंडिया रेडियो, जिसे आकाशवाणी भी कहते हैं, प्रसार भारती के अंतर्गत कार्य करता है। प्रसार भारती भारत का सार्वजनिक सेवा प्रसारण निगम है। प्रश्न के दूसरे भाग में इसी संस्था का नाम अपेक्षित है।

चरण 3: निष्कर्ष आल इंडिया रेडियो की स्थापना 8 जून 1936 को हुई। यह प्रसार भारती के अंतर्गत है।

त्वरित सुझाव: उत्तर को दो हिस्सों में लिखें: पहले 8 जून 1936 की तिथि, फिर संस्था के रूप में प्रसार भारती का नाम।

6(ङ). निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए :

फ़ीचर के दो लक्षण लिखिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़ीचर तथ्यपरक होने के साथ रोचक और मानवीय दृष्टि से लिखा जाने वाला लेख होता है।
- उसमें विषय को प्रभावशाली बनाने के लिए वर्णनात्मक एवं चित्रात्मक भाषा का प्रयोग होता है।

चरण 1: पहला लक्षण : मानवीय रोचकता फ़ीचर किसी विषय से जुड़े मानवीय अनुभवों, भावनाओं और जीवन-स्थितियों को रोचक ढंग से प्रस्तुत करता है। उसका उद्देश्य पाठक की रुचि बनाए रखते हुए विषय को संवेदनशील दृष्टि से समझाना है।

चरण 2: दूसरा लक्षण : सजीव प्रस्तुति फ़ीचर की भाषा सरल, सजीव और चित्रात्मक होती है। घटनाओं तथा परिवेश का वर्णन पाठक को विषय से जोड़ता है। यह शैली तथ्यपरक सामग्री को आकर्षक बनाती है, पर मनगढ़ंत तथ्य जोड़ने की छूट नहीं देती।

चरण 3: निष्कर्ष फ़ीचर के दो लक्षण हैं: मानवीय रुचि एवं संवेदना की प्रधानता और सरल, रोचक तथा चित्रात्मक भाषा में सजीव प्रस्तुति।

त्वरित सुझाव: दो स्पष्ट और अलग लक्षण चुनें: एक विषय के मानवीय पक्ष से और दूसरा भाषा तथा प्रस्तुति की शैली से।

---

7. 'स्वच्छता-अभियान' विषय पर एक फ़ीचर लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़ीचर किसी सामाजिक विषय को मानवीय अनुभव, रोचक आरंभ और सहज भाषा के साथ प्रस्तुत करता है। इसमें सूचना के साथ संवेदना और विचार भी रहते हैं।
- स्वच्छता-अभियान पर लिखते समय आसपास का दृश्य, स्वास्थ्य पर प्रभाव, नागरिकों की भागीदारी और स्थायी सुधार के उपाय जोड़ने चाहिए।

चरण 1: प्रारूप और विषय की योजना आकर्षक शीर्षक और लेखक की पंक्ति दीजिए। किसी परिचित दृश्य से शुरुआत करके कचरे की समस्या तथा उसके समाधान तक पहुँचिए। केवल नारे गिनाने के स्थान पर लोगों की आदतों और साझा जिम्मेदारी को केंद्र में रखिए।

चरण 2: पूर्ण आदर्श फ़ीचर स्वच्छता-अभियान: बदलती गली, बदलती सोच

लेखक: एक विद्यार्थी

सुबह की धूप गली में उतर चुकी है। हाथ में झाड़ू लिए बच्चे, बुज़ुर्ग और युवक आज एक साथ बाहर निकले हैं। कल तक कूड़े से अटा कोना अब साफ दिखने लगा है। एक छोटी पहल ने मोहल्ले की सूरत बदल दी है।

लेकिन क्या एक दिन की सफाई पर्याप्त है? असली चुनौती उस कोने को फिर से कूड़ाघर बनने से रोकना है। खुले में पड़ा कचरा दुर्गंध

फैलाता है और मक्खियों तथा मच्छरों को पनपने का अवसर देता है। बंद नालियाँ बरसात में जलभराव बढ़ाती हैं। सफाई इसलिए केवल सुंदरता का प्रश्न नहीं, स्वस्थ जीवन की जरूरत भी है।

अभियान की सफलता घर से शुरू होती है। गीला और सूखा कचरा अलग रखना, कूड़ा निर्धारित स्थान पर देना तथा अनावश्यक प्लास्टिक से बचना हमारी रोजमर्रा की जिम्मेदारियाँ हैं। सार्वजनिक शौचालयों को साफ रखना और सड़कों पर न थूकना भी इसी जिम्मेदारी का हिस्सा है। नगर निकाय नियमित कचरा उठाएँ और नागरिक व्यवस्था में सहयोग दें, तभी प्रयास टिकेगा।

सफाईकर्मियों के श्रम का सम्मान इस अभियान की बुनियाद है। उन्हें साधन और सुरक्षा देना भी आवश्यक है। विद्यालयों की पहल तथा मोहल्ला समितियों की निगरानी अच्छे व्यवहार को आदत बना सकती है।

झाड़ू रख देने के बाद भी अभियान समाप्त नहीं होता। जब अपना घर और अपनी गली समान रूप से अपने लगने लगें, तभी स्वच्छता जीवन का संस्कार बनती है।

चरण 3: निष्कर्ष फ़ीचर स्वच्छता को स्वास्थ्य, नागरिक सहभागिता और नियमित व्यवहार से जोड़ता है तथा रोचक दृश्य से शुरू होकर सकारात्मक संदेश पर समाप्त होता है।

त्वरित सुझाव: फ़ीचर में पहले दृश्य रचिए, फिर समस्या और उपाय जोड़िए; केवल नारे लिखकर विषय समाप्त न कीजिए।

अथवा

7. 'सजग नागरिक' विषय पर एक फ़ीचर लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़ीचर का उद्देश्य विषय को रोचक, संवेदनशील और तथ्यपरक ढंग से पाठक के जीवन से जोड़ना है। शीर्षक, मानवीय प्रसंग और प्रवाहपूर्ण प्रस्तुति इसकी विशेषताएँ हैं।
- सजग नागरिक अपने अधिकार जानने के साथ कर्तव्य निभाता है। उसकी सजगता सड़क, पड़ोस, पर्यावरण तथा लोकतांत्रिक भागीदारी में दिखाई देती है।

चरण 1: प्रारूप और सामग्री का चयन शीर्षक और लेखक का उल्लेख करके किसी परिचित स्थिति से आरंभ कीजिए। उसके बाद छोटे-छोटे नागरिक व्यवहारों का सामाजिक महत्त्व समझाइए। अधिकार और कर्तव्य दोनों जोड़िए तथा अंत में विचारोत्तेजक संदेश दीजिए।

चरण 2: पूर्ण आदर्श फ़ीचर सजग नागरिक: बदलाव का पहला कदम

लेखक: एक विद्यार्थी

चौराहे पर लाल बत्ती जल रही है। सड़क लगभग खाली है, फिर भी एक साइकिल सवार रुकता है। उसके पीछे खड़े बच्चे भी प्रतीक्षा करते हैं। यह छोटा-सा दृश्य बताता है कि नियमों का सम्मान निगरानी के डर से ही नहीं, जिम्मेदारी के भाव से भी किया जा सकता है।

सजग नागरिक वही है जो अपने व्यवहार का दूसरों पर पड़ने वाला प्रभाव समझता है। वह सार्वजनिक स्थान पर कूड़ा नहीं फेंकता, पानी व्यर्थ नहीं बहाता और सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान नहीं पहुँचाता। सड़क पर घायल व्यक्ति देखकर सहायता का उपाय करता है। उसके लिए समाज केवल शिकायत करने की जगह नहीं, योगदान देने का अवसर भी है।

सजगता का एक पक्ष अधिकारों की जानकारी है। गलत बिल मिलने पर स्पष्टीकरण माँगना, उपभोक्ता के रूप में रसीद लेना और स्थानीय समस्या की शिकायत संबंधित कार्यालय में करना जिम्मेदार पहल हैं। शिकायत में तथ्य और शालीन भाषा हों, तो संवाद सार्थक बनता है।

लोकतंत्र में जागरूक मतदाता की भूमिका विशेष है। पात्र नागरिक को उम्मीदवारों और मुद्दों की जानकारी लेकर मतदान करना चाहिए। इसी तरह किसी संदेश को आगे भेजने से पहले उसकी सत्यता जाँचना आवश्यक है। अफवाह समाज में अविश्वास बढ़ा सकती है।

सजग नागरिक जाति, धर्म या भाषा के आधार पर भेदभाव नहीं करता। वह मतभेद में भी दूसरे की गरिमा का सम्मान करता है। बदलाव की शुरुआत किसी बड़े पद से नहीं होती। अपनी बारी की प्रतीक्षा करना, सच बोलना और जरूरतमंद का साथ देना भी बेहतर समाज की नींव रखते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष यह फ़ीचर सजग नागरिकता को अधिकार-बोध, कर्तव्यपालन, विवेक और दूसरों के प्रति संवेदनशील व्यवहार के रूप

में प्रस्तुत करता है।

त्वरित सुझाव: सजग नागरिक पर लिखते समय एक दैनिक दृश्य के साथ अधिकार, कर्तव्य और विवेकपूर्ण भागीदारी के उदाहरण अवश्य जोड़िए।

8. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

प्रभु प्रलाप सुनि कान बिकल भए वानर निकर ।
आइ गयउ हनुमान, जिमि करुना महँ वीर रस ।। [6 अंक]

8(क). काव्य-पंक्तियों का भाव-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाव-सौंदर्य में प्रसंग का भाव, पात्रों की मनःस्थिति और उससे उत्पन्न पाठकीय अनुभूति स्पष्ट की जाती है।
- इन पंक्तियों में राम का विलाप करुणा जगाता है और हनुमान का आगमन आशा तथा उत्साह का संचार करता है।

चरण 1: करुण वातावरण का चित्रण लक्ष्मण की मूर्च्छा से व्याकुल राम का विलाप सुनकर सभी वानर अत्यंत दुखी और व्यथित हो जाते हैं। अपने प्रिय स्वामी की पीड़ा उन्हें भी असह्य लगती है। इससे राम के भ्रातृप्रेम के साथ वानरों की उनके प्रति आत्मीयता और संवेदनशीलता प्रकट होती है।

चरण 2: हनुमान के आगमन से भाव-परिवर्तन ऐसे शोकपूर्ण वातावरण में हनुमान का आगमन मानो करुण रस के बीच वीर रस का प्रवेश है। उनके आने से निराशा के स्थान पर आशा और उत्साह जागते हैं। कवि ने करुणा और वीरता का सुंदर समन्वय करके हनुमान को संकट के समय आशा जगाने वाले कर्मवीर के रूप में प्रस्तुत किया है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश का भाव-सौंदर्य राम के शोक से व्यथित वानर-समूह तथा हनुमान के आगमन से जागती आशा और उत्साह के मार्मिक विरोध में है।

त्वरित सुझाव: भाव-सौंदर्य बताते समय पहले राम और वानरों की व्याकुलता, फिर हनुमान के आगमन से आया भाव-परिवर्तन लिखिए।

8(ख). प्रयुक्त दो अलंकारों के उदाहरण चुनकर उनके सौंदर्य पर टिप्पणी कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अलंकार की पहचान के साथ पंक्ति का उदाहरण और उसके प्रभाव को स्पष्ट करना आवश्यक है।
- उपमा में समानता प्रकट होती है; अनुप्रास में किसी वर्ण की आवृत्ति से ध्वनि-सौंदर्य उत्पन्न होता है।

चरण 1: उपमा अलंकार और उसका सौंदर्य 'आइ गयउ हनुमान, जिमि करुना महँ वीर रस' में उपमा अलंकार है। हनुमान के आगमन की तुलना करुण रस के बीच वीर रस के प्रवेश से की गई है। 'जिमि' उपमावाचक शब्द है। यह तुलना शोकमय वातावरण में हनुमान द्वारा उत्पन्न आशा और उत्साह को सजीव बनाती है।

चरण 2: अनुप्रास अलंकार और उसका सौंदर्य 'सुनि कान बिकल भए वानर निकर' में 'न' वर्ण की आवृत्ति से अनुप्रास का सौंदर्य है। इस प्रकार अलंकार भावों को अधिक मूर्त बनाते हैं। ध्वनियों की पुनरावृत्ति पंक्ति को लयात्मक तथा श्रवण-मधुर बनाती है और सामूहिक व्याकुलता की अभिव्यक्ति को प्रभावी करती है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश में 'जिमि करुना महँ वीर रस' उपमा का तथा 'सुनि कान बिकल भए वानर निकर' में 'न' की आवृत्ति अनुप्रास का उदाहरण है।

त्वरित सुझाव: उपमा के लिए तुलना और 'जिमि' पहचानिए; अनुप्रास के लिए दिए हुए पाठ में दोहराए गए व्यंजन को रेखांकित कीजिए।

8(ग). काव्यांश की भाषा-शैली की दो विशेषताएँ लिखिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश की भाषा और शैली को पहचानने के लिए उसके शब्दरूप तथा भावों की अभिव्यक्ति पर ध्यान दिया जाता है।
- यहाँ राम का विलाप करुण भाव जगाता है और हनुमान का आगमन वीरता तथा आशा का संचार करता है।

चरण 1: भाषा की विशेषता काव्यांश की भाषा साहित्यिक अवधी है। 'सुनि', 'भए', 'गयउ' और 'महँ' जैसे शब्द इसके प्रमाण हैं। इन प्रचलित, सहज शब्दरूपों के कारण भाव स्पष्ट और प्रभावपूर्ण बनते हैं। थोड़े शब्दों में वानरों की व्याकुलता और हनुमान के आगमन का पूरा दृश्य सामने आ जाता है।

चरण 2: शैली की विशेषता इसकी शैली भावात्मक और चित्रात्मक है। 'बिकल भए वानर निकर' राम का विलाप सुनकर वानर-समूह की व्याकुलता को सजीव करता है। 'जिमि करुना महँ वीर रस' में उपमा द्वारा हनुमान के आगमन को करुण प्रसंग में वीर रस के प्रवेश जैसा बताया गया है। इस प्रकार करुण और वीर भावों का प्रभावशाली मेल दिखाई देता है।

चरण 3: निष्कर्ष दो विशेषताएँ हैं—सहज, प्रवाहपूर्ण अवधी भाषा तथा उपमा से युक्त भावात्मक-चित्रात्मक शैली।

त्वरित सुझाव: भाषा के लिए 'गयउ' जैसे शब्द और शैली के लिए 'जिमि' वाली उपमा का उदाहरण अवश्य दें।

अथवा

8. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

हँसते हैं पौधे लघु भार
शस्य अपार
हिल-हिल, खिल-खिल
हाथ हिलाते
तुझे बुलाते,
विप्लव-रव से छोटे ही हैं शोभा पाते । [6 अंक]

8(क). काव्यांश का शिल्प-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शिल्प-सौंदर्य में भाषा, अलंकार, लय, शब्द-चयन और चित्रात्मकता का विवेचन किया जाता है।
- प्रकृति को मानवीय क्रियाएँ देते हुए कवि बादल के स्वागत का सजीव दृश्य बनाता है।

चरण 1: अलंकार और बिंब पहचानना पौधों को हँसते, हाथ हिलाते और बादल को बुलाते दिखाने से मानवीकरण अलंकार आया है। पौधों की लहराती डालियाँ हाथों जैसी प्रतीत होती हैं। इससे प्रकृति का दृश्य मात्र वर्णन न रहकर उत्साह से भरा जीवंत चित्र बन जाता है। 'हिल-हिल' और 'खिल-खिल' में पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार गति तथा प्रसन्नता को उभारता है।

चरण 2: भाषा और लय का प्रभाव खड़ी बोली की भाषा में 'शस्य', 'विप्लव' और 'रव' जैसे तत्सम शब्द भाव को गरिमा देते हैं। छोटी-बड़ी पंक्तियों का मुक्त छंद, शब्दों की पुनरावृत्ति तथा 'हिलाते-बुलाते' की ध्वनि-समानता सहज लय उत्पन्न करती है। छोटे पौधों का चित्र क्रांति से लाभान्वित होने वाले साधारण जनों की ओर भी संकेत करता है।

चरण 3: निष्कर्ष मानवीकरण, पुनरुक्तिप्रकाश, सजीव प्रकृति-बिंब और मुक्त छंद की लय इस अंश का प्रमुख शिल्प-सौंदर्य हैं।

त्वरित सुझाव: शिल्प के उत्तर में 'हँसते' से मानवीकरण और 'हिल-हिल' से पुनरुक्तिप्रकाश सिद्ध करें।

8(ख). काव्यांश का भाव-सौंदर्य समझाइए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाव-सौंदर्य का विवेचन कविता में निहित अनुभूति, संदेश और प्रतीकात्मक आशय के आधार पर होता है।
- छोटे पौधों की प्रसन्नता के माध्यम से कवि साधारण जन की परिवर्तन के प्रति आशा व्यक्त करता है।

चरण 1: प्रकृति के दृश्य का भाव बादल को देखकर छोटे पौधे और अपार फसल प्रसन्न हैं। वे हिलते-लहराते हुए मानो हँस रहे हैं, हाथ हिला रहे हैं और बादल को अपने पास बुला रहे हैं। वर्षा उनके विकास और जीवन के लिए उपयोगी है। इसलिए उनके स्वागत में भय नहीं, बल्कि उमंग, आत्मीयता और नई चेतना का भाव प्रकट होता है।

चरण 2: प्रतीकात्मक संदेश यहाँ बादल का 'विप्लव-रव' क्रांति और सामाजिक परिवर्तन का संकेत है। छोटे पौधे साधारण, उपेक्षित और शोषित जनों के प्रतीक हैं। क्रांति से ऐसे लोगों को अपने जीवन को सँवारने का अवसर मिलता है; इसीलिए वे उसका उत्साह से स्वागत करते हैं। कवि की सहानुभूति छोटे लोगों के साथ है और उसे परिवर्तन में उनके उत्थान की आशा दिखाई देती है।

चरण 3: निष्कर्ष अंश में छोटे और साधारण जनों की क्रांति के प्रति उमंग तथा उससे उनके जीवन में आने वाले विकास और सम्मान की आशा का सौंदर्य व्यक्त हुआ है।

त्वरित सुझाव: प्रकृति का सीधा भाव लिखने के बाद छोटे पौधों को साधारण जन और बादल को क्रांति से जोड़ें।

8(ग). प्रयुक्त भाषा की दो विशेषताएँ लिखिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाषागत विशेषताएँ बताते समय भाषा का रूप और शब्दों का भावात्मक प्रभाव उदाहरण सहित स्पष्ट करना चाहिए।
- इस अंश में खड़ी बोली की सहजता के साथ तत्सम शब्दावली तथा आवृत्तिमूलक ध्वनि-योजना मिलती है।

चरण 1: भाषा और शब्दावली काव्यांश की भाषा साहित्यिक खड़ी बोली है। 'हँसते हैं', 'हाथ हिलाते' और 'तुझे बुलाते' जैसे सरल प्रयोग इसे सहज एवं संप्रेषणीय बनाते हैं। साथ ही 'शस्य', 'विप्लव' और 'रव' जैसे तत्सम शब्द इसे अर्थ-गौरव प्रदान करते हैं। इस प्रकार बोलचाल की निकटता और साहित्यिक गंभीरता दोनों साथ आती हैं।

चरण 2: लय और चित्रात्मकता भाषा लयात्मक तथा चित्रात्मक है। 'हिल-हिल', 'खिल-खिल' की पुनरावृत्ति से पौधों की गति और प्रसन्नता सुनाई तथा दिखाई पड़ती है। 'हिलाते' और 'बुलाते' की समान ध्वनियाँ प्रवाह बढ़ाती हैं। पौधों के हँसने और हाथ हिलाने वाले प्रयोग दृश्य को जीवंत बनाते हैं तथा बादल के स्वागत का उत्साह पाठक तक पहुँचाते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष दो प्रमुख विशेषताएँ हैं—तत्सम शब्दों से समृद्ध सहज खड़ी बोली और पुनरावृत्ति से बनी लयात्मक, चित्रात्मक भाषा।

त्वरित सुझाव: दो विशेषताओं के साथ अलग उदाहरण दें: शब्दावली के लिए 'विप्लव', लय के लिए 'खिल-खिल'।

9. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

खेती न किसान को भिखारी को न भीख बलि,
बनिक को बनिज न चाकर को चाकरी ।।
जीविका विहीन लोग सीद्यमान सोचबस
कहें एक एकन सों कहाँ जाई का करी ।।
बेदहूँ पुरान कही, लोकहूँ विलोकियत
साँकरे सबै पै राम रावरें कृपा करी ।।
दारिद दसानन दबाई दुनी, दीनबन्धु,
दुरित-दहन देखि तुलसी हहा करी ।। [8 अंक]

9(क). प्रकृति और शासन की विषमता के कारणों का उल्लेख कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश समाज के विभिन्न वर्गों की आजीविका के संकट और दारिद्र्य का चित्र प्रस्तुत करता है।
- कारणों का उल्लेख करते हुए कवि द्वारा दिए संकेतों को आधार बनाना चाहिए; अंश में किसी विशेष शासक या निश्चित कर का नाम नहीं है।

चरण 1: प्रकृति की विषमता का प्रभाव 'खेती न किसान को' में कृषि के ठप पड़ने और किसान की असहायता का चित्र है। प्राकृतिक प्रतिकूलता तथा उपज के अभाव से किसान की जीविका संकट में आती है। कृषि-आधारित समाज में इसका प्रभाव अन्य वर्गों पर भी पड़ता है। जब स्वयं लोगों के पास साधन नहीं रहते, तब भिखारी को भी भीख नहीं मिल पाती।

चरण 2: शासन और सामाजिक व्यवस्था का संकट 'बनिक को बनिज न चाकर को चाकरी' से व्यापार और रोजगार के अवसरों का अभाव स्पष्ट है। आजीविका उपलब्ध कराने तथा विपत्ति में सहायता देने वाली सामाजिक-शासकीय व्यवस्था की निष्प्रभाविता से संकट बढ़ता है। लोग चिंतित होकर पूछते हैं कि कहाँ जाएँ और क्या करें। अंश का केंद्र इसी व्यापक निर्धनता और असहायता पर है, किसी विशिष्ट प्रशासनिक घटना के विवरण पर नहीं।

चरण 3: निष्कर्ष प्राकृतिक प्रतिकूलता से कृषि का संकट और व्यापार-रोजगार तथा लोक-सहायता की व्यवस्था का अभाव विषमता बढ़ाते हैं; फलतः सभी वर्ग निर्धनता और चिंता से ग्रस्त हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर को किसान, व्यापारी और चाकर की स्थितियों से जोड़ें; किसी अनुल्लिखित शासक या कर का नाम न जोड़ें।

9(ख). तुलसीदास को इस दुरवस्था में किसका भरोसा है और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भक्तिकाव्य में विपत्ति के समय आराध्य की करुणा पर विश्वास भक्त का मुख्य आश्रय होता है।
- कवि अपने विश्वास को वेद-पुराण के कथन और लोक में देखे गए अनुभव, दोनों से पुष्ट करता है।

चरण 1: भरोसे का आधार पहचानना इस दुरवस्था में तुलसीदास को भगवान राम का भरोसा है। किसान, व्यापारी, सेवक और भिखारी सब आजीविका के अभाव में दुखी हैं। सांसारिक सहारे निष्फल दिखने पर कवि राम से करुणा की प्रार्थना करता है। 'दीनबन्धु' संबोधन से स्पष्ट है कि वह उन्हें निर्धनों और असहायों का सच्चा हितैषी मानता है।

चरण 2: विश्वास का कारण स्पष्ट करना 'बेदहूँ पुरान कही, लोकहूँ विलोकियत' के अनुसार वेद-पुराण भी राम की कृपालुता बताते हैं और संसार में भी उनकी कृपा का अनुभव होता है। 'साँकरे सबै पै राम रावरें कृपा करी' में संकटग्रस्त लोगों पर राम की कृपा का विश्वास है। इसलिए तुलसीदास आशा करते हैं कि राम इस दारिद्र्य और दुख को भी दूर करेंगे तथा पीड़ित लोगों की रक्षा करेंगे।

चरण 3: निष्कर्ष तुलसीदास को दीनबंधु राम का भरोसा है, क्योंकि वे संकट में सब पर कृपा करते हैं; शास्त्र और लोक-अनुभव दोनों उनकी करुणा की पुष्टि करते हैं।

त्वरित सुझाव: 'किसका' के लिए राम का नाम और 'क्यों' के लिए दीनबंधु स्वरूप तथा शास्त्र-लोक के प्रमाण लिखें।

9(ग). रावण की तुलना किससे की गई है और क्यों ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रूपक में उपमेय पर उपमान का सीधा आरोप किया जाता है; यहाँ दारिद्र्य को दसानन कहा गया है।
- तुलना का उद्देश्य निर्धनता की व्यापक पीड़ा और उसके दमनकारी प्रभाव को मूर्त करना है।

चरण 1: तुलना की पहचान 'दारिद दसानन दबाई दुनी' में दारिद्र्य अर्थात गरीबी को दसानन, यानी रावण के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इसलिए प्रश्न का आशय है कि रावण-समान किसे कहा गया है। कवि ने गरीबी पर रावण का सीधा आरोप करके रूपक अलंकार का प्रयोग किया है। 'दबाई दुनी' पद गरीबी के कारण समूचे संसार की पीड़ा को व्यक्त करता है।

चरण 2: तुलना का औचित्य जिस प्रकार रावण अपने बल और अत्याचार से लोगों को दबाता था, उसी प्रकार गरीबी लोगों को असहाय बनाकर उनका जीवन दुख से भर रही है। किसान को खेती, व्यापारी को व्यापार और सेवक को नौकरी नहीं मिल रही। इस व्यापक दमनकारी प्रभाव के कारण दारिद्र्य रावण के समान भयावह है। राम को पुकारना इस आशा से जुड़ा है कि वे रावण-सदृश इस संकट का भी अंत करेंगे।

चरण 3: निष्कर्ष रावण की तुलना दारिद्र्य से की गई है, क्योंकि गरीबी भी उसके समान संसार को दबाकर लोगों को पीड़ित और असहाय बना देती है।

त्वरित सुझाव: 'दारिद दसानन' को आधार बनाकर गरीबी और रावण का साझा गुण—दमन और पीड़ा—स्पष्ट करें।

9(घ). आशय स्पष्ट कीजिए :

साँकरे सबै पै राम रावरें कृपा करी ।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पंक्ति का अर्थ संकटग्रस्त मनुष्य के प्रति राम की करुणा और संरक्षण से जुड़ा है।
- प्रसंग में आजीविका से वंचित समाज की दुर्दशा के बीच कवि राम को दीनों का सहायक मानता है।

चरण 1: शब्दों से भाव ग्रहण करें यहाँ 'साँकरे' का अर्थ संकट अथवा कठिन परिस्थिति है और 'रावरें' का अर्थ आपके है। कवि राम को संबोधित करके कहता है कि संकट में पड़े सभी लोगों पर आपने कृपा की है। इस कथन में विपत्ति दूर करने वाली राम की करुणा के प्रति विश्वास प्रकट होता है।

चरण 2: प्रसंग से आशय स्पष्ट करें काव्यांश में किसान, भिखारी, व्यापारी और सेवक सभी जीविका के अभाव से व्याकुल हैं। ऐसी व्यापक असहायता में तुलसीदास राम को दीनबन्धु कहकर पुकारते हैं। जिस प्रकार राम संकटग्रस्त लोगों के सहायक रहे हैं, उसी प्रकार अब भी वे इस दुखी समाज पर कृपा करें और उसे दारिद्र्य से मुक्ति दें। यह पंक्ति इसी भरोसे तथा करुण प्रार्थना को व्यक्त करती है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि का आशय है कि हे राम, आपने संकट में पड़े सभी लोगों पर कृपा की है; इसलिए आजीविकाहीन, दुखी जनता का संकट भी आपकी करुणा से दूर हो सकता है।

त्वरित सुझाव: 'साँकरे' का अर्थ संकट लिखकर उसे काव्यांश की आर्थिक दुर्दशा और राम की करुणा से जोड़ें।

अथवा

9. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

बात सीधी थी पर एक बार
भाषा के चक्कर में
ज़रा टेढ़ी फँस गई ।
उसे पाने की कोशिश में
भाषा को उलटा पलटा
तोड़ा मरोड़ा
घुमाया फिराया
कि बात या तो बने
या फिर भाषा से बाहर आए –
लेकिन इससे भाषा के साथ-साथ
बात और भी पेचीदा होती चली गई ।
सारी मुश्किल को धैर्य से समझे बिना
मैं पेंच को खोलने के बजाए
उसे बेतरह कसता चला जा रहा था
क्योंकि इस करतब पर मुझे
साफ़ सुनाई दे रही थी
तमाशबीनों की शाबाशी और वाह वाह । [8 अंक]

9(क). बात को धैर्य से समझने से कवि का क्या आशय है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में सहज बात और उपयुक्त भाषा का संतुलन मुख्य विषय है।
- धैर्य का आशय कथ्य की प्रकृति समझकर उसके अनुकूल अभिव्यक्ति चुनना है।

चरण 1: धैर्य का अर्थ समझें बात को धैर्य से समझने का आशय है कि कवि पहले अपने विचार के वास्तविक मर्म, भाव और उद्देश्य को शांत मन से पहचाने। उसे यह समझना चाहिए कि वह क्या कहना चाहता है और उस बात को किस सहज रूप में पाठक तक पहुँचाया जा सकता है। केवल शब्द बदलते रहने से बात स्पष्ट नहीं होती।

चरण 2: काव्यांश के संकेत से स्पष्ट करें कवि स्वीकार करता है कि वह मुश्किल को समझे बिना पेंच खोलने के बजाय उसे कसता चला गया। यह भाषा से अनावश्यक छेड़छाड़ का संकेत है। धैर्य से समझने पर वह शब्दों के करतब और दर्शकों की वाहवाही के मोह से बच सकता था। तब बात की मूल सरलता सुरक्षित रहती और उसे व्यक्त करने के लिए स्वाभाविक, सटीक भाषा मिलती।

चरण 3: निष्कर्ष कवि के अनुसार धैर्य से समझना अपनी बात के मर्म को पहचानना और बिना हड़बड़ी तथा भाषाई प्रदर्शन के उसके अनुरूप सहज अभिव्यक्ति खोजना है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पेंच खोलने के बिंब को बात समझने और उचित भाषा चुनने की प्रक्रिया से जोड़ें।

9(ख). बात और भाषा परस्पर एक-दूसरे से कैसे सम्बद्ध हैं ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बात कथ्य है और भाषा उसे दूसरों तक पहुँचाने का माध्यम है।
- सार्थक अभिव्यक्ति में भाषा का चयन बात के स्वभाव और उद्देश्य के अनुरूप होता है।

चरण 1: दोनों की भूमिका बताएँ बात मन का विचार या भाव है, जबकि भाषा उस विचार को व्यक्त करने का साधन है। बात के बिना भाषा केवल शब्दों का बाहरी प्रदर्शन रह जाती है। दूसरी ओर उपयुक्त भाषा के बिना बात स्पष्ट रूप में सामने नहीं आ पाती। इसलिए दोनों एक-दूसरे से घनिष्ठ रूप से जुड़े हैं।

चरण 2: कविता के उदाहरण से संबंध समझाएँ काव्यांश में सीधी बात भाषा के उलटने-पलटने और तोड़ने-मरोड़ने से पेचीदा होती जाती है। इससे स्पष्ट है कि भाषा की बनावट कथ्य की स्पष्टता को प्रभावित करती है। सहज भाषा बात को संप्रेषित करती है, जबकि अनावश्यक शब्द-कौशल उसके अर्थ को उलझा देता है। कवि इसी कारण बात और भाषा में ऐसा सामंजस्य चाहता है जिसमें शब्द भाव को सरलता से व्यक्त करें।

चरण 3: निष्कर्ष बात और भाषा का संबंध कथ्य और अभिव्यक्ति का है। उपयुक्त भाषा बात को स्पष्ट करती है; उससे अनावश्यक छेड़छाड़ बात के अर्थ को भी जटिल बना देती है।

त्वरित सुझाव: पहले कथ्य और माध्यम का भेद बताएँ, फिर कविता के उलटने-पलटने वाले प्रसंग से उनका संबंध स्पष्ट करें।

9(ग). बात पेचीदा कब हो जाती है ? क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में भाषा का अनावश्यक प्रदर्शन कथ्य के संप्रेषण में बाधा बनता है।
- बात की प्रकृति समझे बिना शब्दों से छेड़छाड़ करने पर सरल विचार भी उलझ जाता है।

चरण 1: बात पेचीदा होने की स्थिति बताएँ बात तब पेचीदा होती है जब लेखक उसका मर्म समझे बिना उसे प्रभावशाली बनाने के लिए भाषा को बार-बार उलटता-पलटता, तोड़ता-मरोड़ता और घुमाता-फिराता है। स्वाभाविक अभिव्यक्ति के स्थान पर शब्दों की कलाबाजी प्रमुख हो जाती है। फलस्वरूप आरंभ में सीधी रही बात भी समझने में कठिन लगने लगती है।

चरण 2: कारण को पेंच के बिंब से समझाएँ ऐसा इसलिए होता है कि ध्यान कथ्य की स्पष्टता से हटकर भाषाई करतब पर टिक जाता है। कवि दर्शकों की शाबाशी सुनकर उसी प्रदर्शन में लगा रहता है। समस्या को धैर्य से समझने के बजाय वह पेंच खोलने के स्थान पर उसे कसता जाता है। इस तरह भाषा सुधारने का असावधान प्रयास मूल बात को व्यक्त करने के बजाय उसमें और उलझन पैदा करता है।

चरण 3: निष्कर्ष बात भाषा से अनावश्यक छेड़छाड़ और शब्द-कौशल के प्रदर्शन के समय पेचीदा होती है, क्योंकि कथ्य को समझने तथा सहज ढंग से व्यक्त करने का उद्देश्य पीछे छूट जाता है।

त्वरित सुझाव: 'कब' के उत्तर में भाषाई छेड़छाड़ और 'क्यों' के उत्तर में कथ्य से हटे ध्यान को स्पष्ट लिखें।

9(घ). आशय स्पष्ट कीजिए :

भाषा के चक्कर में ज़रा टेढ़ी फँस गई । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पंक्ति में सीधी बात और टेढ़ी अभिव्यक्ति का विरोध अर्थ को उभारता है।
- भाषा कथ्य की सहायक होने के बजाय प्रदर्शन का साधन बने तो संप्रेषण बाधित होता है।

चरण 1: पंक्ति का सरल अर्थ बताएँ पंक्ति का आशय है कि कवि की बात मूलत: सरल और स्पष्ट थी, लेकिन उसे विशेष ढंग से कहने के प्रयास में वह भाषा की उलझनों में फँस गई। शब्दों और वाक्य-विन्यास का अनावश्यक आकर्षण उस सहज विचार पर भारी पड़ गया। इस कारण बात की मूल सरलता बनी नहीं रह सकी।

चरण 2: पूरे काव्यांश से भाव पुष्ट करें आगे कवि भाषा को उलटने-पलटने, तोड़ने-मरोड़ने और घुमाने-फिराने का वर्णन करता है। ये क्रियाएँ दिखाती हैं कि भाषाई प्रयोगों से बात निकलने के बजाय और कठिन होती गई। अत: 'टेढ़ी फँस गई' विचार के जटिल और अस्पष्ट बन जाने का संकेत है। पंक्ति सिखाती है कि अभिव्यक्ति का सौंदर्य बात की सहजता और स्पष्टता को बनाए रखने में है।

चरण 3: निष्कर्ष सरल विचार को चमत्कारपूर्ण भाषा में बाँधने की कोशिश ने उसे उलझा दिया; भाषा की कृत्रिमता के कारण बात का सहज अर्थ स्पष्ट रूप में व्यक्त नहीं हो सका।

त्वरित सुझाव: सरल कथ्य से जटिल अभिव्यक्ति बनने की प्रक्रिया बताएँ और भाषा को तोड़ने-मरोड़ने का संदर्भ दें।

10(क). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' कविता में कवि अपने घर की ओर लौटने में शिथिल और अनुत्साहित क्यों है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में दिन ढलना घर लौटने की आकुलता और कवि के अकेलेपन को उभारता है।
- प्रतीक्षारत प्रियजन का स्नेह घर लौटने का उत्साह देता है; उसके अभाव से कवि की गति शिथिल होती है।

चरण 1: घर लौटते पक्षियों का प्रसंग समझें दिन ढलने पर पक्षियों को अपने नीड़ों में प्रतीक्षा कर रहे बच्चों का ध्यान आता है। बच्चे माता-पिता के आगमन की आशा में बाहर झाँक रहे होंगे। इस स्नेहपूर्ण मिलन की कल्पना पक्षियों के पंखों में चंचलता भर देती है और वे जल्दी लौटना चाहते हैं। कविता में यह प्रसंग घर से जुड़े आकर्षण और प्रतीक्षा की शक्ति को प्रकट करता है।

चरण 2: कवि के अकेलेपन का कारण बताएँ पक्षियों की स्थिति के विपरीत कवि को लगता है कि उसकी प्रतीक्षा में कोई व्याकुल नहीं है। वह प्रश्न करता है कि उससे मिलने के लिए कौन आतुर है और वह किसके लिए जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाए। घर पर किसी आत्मीय के इंतजार का अनुभव न होने से उसमें घर लौटने का वही उत्साह नहीं जागता जो पक्षियों में है। उसका अकेलापन उसकी गति को धीमा कर देता है।

चरण 3: शिथिलता और अनुत्साह का संबंध स्पष्ट करें कवि की शिथिलता का मुख्य कारण शारीरिक थकान नहीं, बल्कि भावनात्मक रिक्तता है। स्नेह और मिलन की आशा गति बढ़ाती है, पर अपने लिए ऐसी आशा न पाकर कवि निरुत्साहित हो जाता है। दिन का जल्दी ढलना उसे समय बीतने का बोध कराता है, किंतु घर पहुँचने के लिए कोई भावनात्मक प्रेरणा नहीं देता। यही विचार उसके मन में व्यथा भी भरता है।

चरण 4: निष्कर्ष कवि अपने घर लौटने में इसलिए शिथिल और अनुत्साहित है कि उसे लगता है, उसकी प्रतीक्षा करने वाला और उससे मिलने को व्याकुल कोई आत्मीय नहीं है। प्रेमपूर्ण स्वागत के अभाव तथा अकेलेपन से उसके कदम धीमे पड़ जाते हैं।

त्वरित सुझाव: पक्षियों के प्रतीक्षारत बच्चों और कवि के सूनेपन की तुलना करके उसके अनुत्साह का भावनात्मक कारण बताएँ।

10(ख). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

'सहर्ष स्वीकारा है' कविता में कवि प्रकाश के स्थान पर अंधकार की कामना क्यों करता है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में प्रकाश प्रिय के स्नेह, संरक्षण और प्रभाव का प्रतीक है।
- अंधकार की कामना प्रिय से संबंध तोड़ने की नहीं, उसके अत्यधिक प्रभाव से मुक्त होकर अपनी स्वतंत्र सत्ता खोजने की है।

चरण 1: प्रकाश से मिलने वाली पीड़ा समझिए कवि ने अपने जीवन का सुख-दुःख, संघर्ष और उपलब्धियाँ प्रिय की देन मानकर सहर्ष स्वीकार की हैं। किंतु प्रिय का सर्वव्यापी स्नेह और ममता अब उसके व्यक्तित्व पर इतना छा गए हैं कि वह स्वयं को स्वतंत्र रूप में अनुभव नहीं कर पाता। प्रिय का भावात्मक प्रकाश उसे लगातार घेरता है; उससे मिलने वाला संरक्षण भी अब आत्मनिर्भरता में बाधा और असह्य दबाव बन गया है। इसीलिए सामान्यतः सुखद माना जाने वाला प्रकाश यहाँ कवि को राहत नहीं देता।

चरण 2: अंधकार की कामना का आशय स्पष्ट कीजिए कवि चाहता है कि उसे ऐसा विस्मरण और अंधकार मिले जिसमें प्रिय का प्रभाव कुछ समय के लिए ओझल हो जाए। वह अपने दुःख और अकेलेपन का सामना स्वयं करके अपने व्यक्तित्व को पहचानना चाहता है। फिर भी उसकी मुक्ति की इच्छा में प्रिय के प्रति आत्मीयता बनी रहती है; वह दंड भी उसी से माँगता है। अतः अंधकार का अर्थ केवल निराशा या जीवन से पलायन नहीं, अत्यधिक ममता से मुक्ति और स्वतंत्र अस्तित्व की तलाश है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि प्रिय के स्नेह और संरक्षण के असह्य प्रभाव से मुक्त होकर अपनी स्वतंत्र पहचान पाने के लिए प्रकाश के स्थान पर अंधकार चाहता है।

त्वरित सुझाव: प्रकाश और अंधकार को भौतिक अर्थ में न लें; उन्हें प्रिय के प्रभाव और उससे मुक्ति की इच्छा से जोड़ें।

10(ग). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

तुलसी के सवैया के आधार पर प्रतिपादित कीजिए कि उन्हें भी जातीय भेदभाव का दबाव झेलना पड़ा था । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सवैये में तुलसीदास को दिए गए संबोधन सामाजिक उपेक्षा और जातिगत आक्षेपों का संकेत हैं।
- कवि का प्रतिवाद जाति की श्रेष्ठता पर नहीं, रामभक्ति और सामाजिक स्वाधीनता पर आधारित है।

चरण 1: समाज के आक्षेपों का प्रमाण दीजिए तुलसीदास कहते हैं कि लोग उन्हें धूत, अवधूत, राजपूत अथवा जुलाहा चाहे जो कह लें। इन परस्पर भिन्न संबोधनों से स्पष्ट होता है कि समाज उनकी जाति और सामाजिक स्थिति को लेकर तरह-तरह के आक्षेप करता था। उन्हें अपनी पहचान की सफाई देने की स्थिति में डालना ही जातीय भेदभाव का दबाव था। सवैये का प्रतिवादी स्वर बताता है कि कवि ने ऐसे व्यवहार को अनुभव किया था और वह उसका दृढ़ उत्तर दे रहे हैं।

चरण 2: तुलसी का उत्तर और उसका अर्थ बताइए कवि स्पष्ट करते हैं कि उन्हें किसी की बेटी से अपने बेटे का विवाह नहीं करना है, जिससे किसी की जाति बिगड़ने का प्रश्न उठे। विवाह और जाति की शुद्धता का यह संदर्भ उस समय की संकीर्ण जातिगत सोच को उजागर करता है। वे स्वयं को राम का दास बताते हैं और माँगकर खाने तथा मस्जिद में सो लेने की निर्भीक घोषणा करते हैं। इसका आशय है कि वे जाति के आधार पर मिलने वाली प्रतिष्ठा या बहिष्कार की परवाह किए बिना अपनी भक्ति और स्वाभिमान को बनाए रखेंगे।

चरण 3: निष्कर्ष सवैये में जातिसूचक आक्षेपों और विवाह से जाति बिगड़ने की धारणा का उल्लेख प्रमाणित करता है कि तुलसी को जातीय भेदभाव सहना पड़ा; उन्होंने रामभक्ति और स्वाभिमान से उसका प्रतिकार किया।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले धूत, अवधूत, राजपूत और जुलाहा वाले आक्षेप दिखाएँ, फिर विवाह तथा जाति बिगड़ने के संदर्भ का अर्थ समझाएँ।

11. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

मेरे परिचितों और साहित्यिक बन्धुओं से भी भक्तिन विशेष परिचित है; पर उनके प्रति भक्तिन के सम्मान की मात्रा, मेरे प्रति उनके सम्मान की मात्रा पर निर्भर है, और सद्भाव उनके प्रति मेरे सद्भाव से निश्चित होता है । इस सम्बन्ध में भक्तिन की सहज बुद्धि विस्मित कर देने वाली है ।

वह किसी को आकार-प्रकार और वेश-भूषा से स्मरण करती है, और किसी को नाम के अपभ्रंश द्वारा । कवि और कविता के सम्बन्ध में उसका ज्ञान बढ़ा है; पर आदर-भाव नहीं । किसी के लम्बे बाल और अस्त-व्यस्त वेश-भूषा देखकर वह कह उठती है 'का ओहू कवित्त लिखे जानत हैं' और तुरन्त ही उसकी अवज्ञा प्रकट हो जाती है – 'तब ऊ कुच्छौ करिहैं धरिहैं ना – बस गली-गली गाउत बजाउत फिरिहैं ।' [8 अंक]

11(क). लेखिका ने भक्तिन की बुद्धि को विस्मित कर देने वाली क्यों कहा है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार दिए हुए गद्यांश में भक्तिन के सम्मान और सद्भाव का निर्धारण है।
- सहज बुद्धि का अर्थ यहाँ औपचारिक शिक्षा के बिना संबंधों को परख लेने की क्षमता है।

चरण 1: सम्मान की कसौटी पहचानिए भक्तिन लेखिका के परिचितों और साहित्यिक बंधुओं से परिचित है। वह उनके पद, प्रसिद्धि अथवा वेशभूषा को सम्मान की अंतिम कसौटी नहीं बनाती। उसके सम्मान की मात्रा इस बात पर निर्भर करती है कि वे लेखिका का कितना सम्मान करते हैं। इस प्रकार वह लोगों के व्यवहार में लेखिका के प्रति आदर को समझकर उनके प्रति अपना आचरण तय कर लेती है।

चरण 2: सद्भाव से संबंध जोड़िए लेखिका जिस व्यक्ति के प्रति जितना सद्भाव रखती हैं, भक्तिन भी उसके प्रति वैसा ही सद्भाव रखती है। दूसरों के व्यवहार और लेखिका की भावनाओं को समझकर अपना संबंध तय कर लेने की यह क्षमता स्वाभाविक है। यही सूक्ष्म संबंध-बोध लेखिका को आश्चर्यचकित करता है; इसलिए वे भक्तिन की सहज बुद्धि को विस्मित कर देने वाली कहती हैं।

चरण 3: निष्कर्ष भक्तिन लोगों का सम्मान उनके द्वारा लेखिका को दिए गए सम्मान के अनुसार और सद्भाव लेखिका के सद्भाव के अनुसार तय करती है। संबंधों को सहज ही परख लेने की उसकी यही क्षमता विस्मयकारी है।

त्वरित सुझाव: भक्तिन की बुद्धि का उत्तर देते समय सम्मान की दो दिशाएँ स्पष्ट करें: लोग लेखिका को कैसे देखते हैं और लेखिका उन्हें कैसे देखती हैं।

11(ख). कवियों के सम्बन्ध में भक्तिन की क्या मान्यता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में कवियों का ज्ञान बढ़ने और उनके प्रति आदर न बढ़ने का अंतर महत्त्वपूर्ण है।
- भक्तिन की मान्यता उसके व्यावहारिक श्रम को महत्त्व देने वाले दृष्टिकोण से व्यक्त होती है।

चरण 1: ज्ञान और आदर का अंतर बताइए लेखिका के साहित्यिक परिचितों के संपर्क में आने से भक्तिन कवि और कविता के विषय में पहले से अधिक जानने लगी है। किंतु इस जानकारी से कवियों के प्रति उसके मन में विशेष आदर पैदा नहीं हुआ है। लंबे बालों और अस्त-व्यस्त वेशभूषा वाले व्यक्ति को देखकर वह पूछती है कि क्या वह भी कविता लिखना जानता है। यह प्रश्न प्रशंसा के भाव से नहीं पूछा गया है।

चरण 2: उसकी मान्यता स्पष्ट कीजिए भक्तिन की धारणा है कि कविता लिखने वाले कोई उपयोगी काम-धंधा नहीं करते; वे बस गली-गली गाते-बजाते फिरते हैं। गद्यांश में उसकी टिप्पणी इसी अवमाननापूर्ण दृष्टि को प्रकट करती है। इसलिए कवि होना उसके लिए प्रतिष्ठा का कारण नहीं है। यहाँ यह विचार भक्तिन की अपनी मान्यता है, जिसे लेखक ने उसके कथन के माध्यम से दिखाया है।

चरण 3: निष्कर्ष भक्तिन कवियों को काम-धंधा न करने वाला और केवल गली-गली गाने-बजाने वाला समझती है; इसलिए कविता संबंधी ज्ञान बढ़ने पर भी उनके प्रति उसका आदर नहीं बढ़ा।

त्वरित सुझाव: कवियों के प्रति भक्तिन की धारणा को उसकी टिप्पणी से जोड़ें और इसे पूरे समाज या लेखिका की मान्यता न बताएँ।

11(ग). 'अवज्ञा' का क्या तात्पर्य है ? भक्तिन किसके प्रति कैसे अवज्ञा व्यक्त करती है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अवज्ञा का अर्थ अनादर, तिरस्कार अथवा सम्मान का अभाव है।
- शब्दार्थ के साथ गद्यांश में उसके व्यवहार का स्पष्ट उदाहरण देना आवश्यक है।

चरण 1: अवज्ञा का अर्थ बताइए अवज्ञा का आशय किसी व्यक्ति या बात के प्रति आदर न रखना तथा उपेक्षा या तिरस्कार प्रकट करना है। प्रस्तुत प्रसंग में यह शब्द कवियों के प्रति भक्तिन के अनादरपूर्ण भाव के लिए आया है। कवियों के बारे में जानकारी बढ़ जाने पर भी उनके प्रति उसके मन में सम्मान नहीं बढ़ा है; इसीलिए उसका प्रश्न और अगली टिप्पणी उपेक्षा का भाव प्रकट करते हैं।

चरण 2: किसके प्रति और कैसे, स्पष्ट कीजिए लंबे बालों और अस्त-व्यस्त वेशभूषा वाले कवि को देखकर भक्तिन पहले पूछती है कि क्या वह भी कविता लिखता है। फिर वह कहती है कि ऐसे लोग कोई काम-धंधा नहीं करेंगे, बस गली-गली गाते-बजाते फिरेंगे। कविता और कवि को उपयोगी कार्य से रहित समझने वाली इस टिप्पणी द्वारा वह कवियों के प्रति अपनी अवज्ञा व्यक्त करती है।

चरण 3: निष्कर्ष अवज्ञा का अर्थ अनादर या तिरस्कार है। भक्तिन कवियों को काम-धंधा न करने वाला और गली-गली गाने-बजाने वाला कहकर उनके प्रति अवज्ञा दिखाती है।

त्वरित सुझाव: इस प्रश्न में तीन बातें अवश्य लिखें: शब्दार्थ, अवज्ञा का पात्र और वह टिप्पणी जिससे अनादर प्रकट होता है।

11(घ). आशय स्पष्ट कीजिए – 'और सद्भाव उनके प्रति मेरे सद्भाव से निश्चित होता है ।' [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उद्धृत कथन में भक्तिन की भावना लेखिका की भावना से निर्धारित होने की बात कही गई है।
- आशय स्पष्ट करते समय सर्वनामों का संदर्भ खोलना चाहिए।

चरण 1: कथन के संदर्भ पहचानिए यहाँ उनके शब्द से लेखिका के परिचितों और साहित्यिक बंधुओं का बोध होता है। मेरे सद्भाव का अर्थ उन लोगों के प्रति लेखिका का अपनापन और अच्छा भाव है। कथन यह बताता है कि भक्तिन का उनके प्रति सद्भाव केवल उनकी बाहरी पहचान अथवा साहित्यिक प्रसिद्धि से तय नहीं होता; उसके लिए लेखिका की भावना विशेष महत्त्व रखती है।

चरण 2: भक्तिन की भावना का आधार बताइए लेखिका जिस परिचित के प्रति जितना अपनापन और सद्भाव रखती हैं, भक्तिन भी उस व्यक्ति के प्रति वैसा ही भाव रखती है। लेखिका की पसंद और आत्मीय संबंध उसके अपने व्यवहार का आधार बन जाते हैं। इससे लेखिका के प्रति भक्तिन की गहरी निष्ठा, आत्मीयता तथा उनके भावों को समझने की सहज क्षमता व्यक्त होती है। वह लेखिका से जुड़े संबंधों को उसी भावभूमि पर स्वीकार करती है।

चरण 3: निष्कर्ष कथन का आशय है कि भक्तिन लेखिका के परिचितों के प्रति अपना सद्भाव लेखिका के सद्भाव के अनुरूप तय करती है। यह लेखिका से उसकी गहरी आत्मीयता और निष्ठा को व्यक्त करता है।

त्वरित सुझाव: आशय लिखते समय उनके और मेरे का संदर्भ स्पष्ट करें, फिर भक्तिन और लेखिका की भावनाओं के संबंध को समझाएँ।

अथवा

11. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

मैं सोचता हूँ कि पुराने की यह अधिकार-लिप्सा क्यों नहीं समय रहते सावधान हो जाती ? जरा और मृत्यु, ये दोनों ही जगत के अति परिचित और अति प्रामाणिक सत्य हैं । तुलसीदास ने अफ़सोस के साथ इनकी सच्चाई पर मुहर लगाई थी – 'धरा को प्रमान यही तुलसी जो फरा सो झरा, जो बरा सो बुताना ।' मैं शिरीष के फूलों को देखकर कहता हूँ कि क्यों नहीं फलते ही समझ लेते बाबा कि झड़ना निश्चित है । सुनता कौन है ? महाकाल देवता सपासप कोड़े चला रहे हैं, जीर्ण और दुर्बल झड़ रहे हैं, जिनमें प्राण-कण थोड़ा भी ऊर्ध्वमुखी है, वे टिक जाते हैं । दुरंत प्राणधारा और सर्वव्यापक कालाग्नि का संघर्ष निरन्तर चल रहा है । मूर्ख समझते हैं कि जहाँ बने हैं, वहीं देर तक बने रहें तो काल-देवता की आँख बचा जाएँगे । [8 अंक]

11(क). शिरीष की किस विशेषता के कारण लेखक को यह सब लिखना पड़ा है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रसंग में शिरीष के पुराने फलों का डालियों पर दृढ़ता से टिके रहना अधिकार-लिप्सा का प्रतीक है।
- लेखक इस प्राकृतिक स्थिति से जीवन में परिवर्तन स्वीकार करने की आवश्यकता स्पष्ट करते हैं।

चरण 1: शिरीष की प्रवृत्ति पहचानना शिरीष के पुराने फल सूख जाने पर भी वृक्ष पर चिपके रहते हैं। उनमें जीवन की ताजगी नहीं रहती, फिर भी वे अपना स्थान छोड़ने को तैयार नहीं होते। नए फल और पत्ते आने पर ही उन्हें हटना पड़ता है। इसी जिद्दी पकड़ ने लेखक का ध्यान खींचा है।

चरण 2: प्रतीक का आशय समझना लेखक पुराने फलों में उन लोगों की छवि देखते हैं जो शक्ति और उपयोगिता घटने पर भी अपना अधिकार बनाए रखना चाहते हैं। वे यह सत्य भूल जाते हैं कि जिसने फलना शुरू किया है उसका झड़ना भी निश्चित है। शिरीष की यही विशेषता लेखक को जरा, मृत्यु और अधिकार-लिप्सा पर विचार करने के लिए प्रेरित करती है।

चरण 3: निष्कर्ष शिरीष के पुराने, सूखे फलों का डालियों पर चिपके रहना और समय पर स्थान न छोड़ना लेखक के इन विचारों का कारण है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में शिरीष के पुराने फलों की जिद को अधिकार से चिपके रहने की मानवीय प्रवृत्ति से जोड़ें।

11(ख). मूर्ख अपना स्थान क्यों नहीं छोड़ते हैं ? उन्हें क्या समझना ज़रूरी है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अधिकार-लिप्सा मनुष्य को परिवर्तन के स्वाभाविक नियम की उपेक्षा करने के लिए उकसाती है।
- जरा और मृत्यु का सत्य स्थान या पद से चिपके रहने पर बदल नहीं जाता।

चरण 1: स्थान न छोड़ने का कारण मूर्ख लोग अधिकार और पद के मोह में अपना स्थान नहीं छोड़ते। उन्हें भ्रम है कि जहाँ वे टिके हुए हैं, वहीं लंबे समय तक बने रहने से वे काल-देवता की आँखों से बच जाएँगे। इस प्रकार वे अपनी स्थिति को स्थायी मान बैठते हैं।

चरण 2: आवश्यक बोध स्पष्ट करना उन्हें समझना चाहिए कि बुढ़ापा, क्षय और मृत्यु जीवन के अनिवार्य सत्य हैं। संसार में परिवर्तन निरंतर होता है; पुराने और दुर्बल का हटना तथा नई जीवनशक्ति का आगे आना स्वाभाविक है। अत: केवल स्थान से चिपके रहना सुरक्षा नहीं देता, बल्कि समय की गति को स्वीकार करना आवश्यक है।

चरण 3: निष्कर्ष मूर्ख अधिकार-मोह और काल से बच निकलने के भ्रम में स्थान नहीं छोड़ते; उन्हें परिवर्तन, जरा और मृत्यु की अनिवार्यता समझनी चाहिए।

त्वरित सुझाव: इस प्रश्न के दोनों हिस्से अलग रखें: पहले अधिकार-मोह का कारण, फिर परिवर्तन की अनिवार्यता बताएँ।

11(ग). किस सच्चाई को उजागर करने के लिए तुलसी को उद्धृत किया गया है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- तुलसीदास का उद्धरण जीवन की नश्वरता और अंत की अनिवार्यता की पुष्टि करता है।
- गद्यांश में जरा और मृत्यु को जगत के अति परिचित तथा प्रामाणिक सत्य कहा गया है।

चरण 1: उद्धरण का अर्थ तुलसीदास के कथन का आशय है कि जो फलता है वह अंततः झड़ता है और जो जलता है वह बुझता है। फलने और जलने की स्थितियाँ स्थायी नहीं हैं; उनके साथ उनका अंत भी जुड़ा हुआ है। यही प्रकृति और जीवन का अटल नियम है।

चरण 2: प्रसंग में सच्चाई स्पष्ट करना लेखक इस उद्धरण से बुढ़ापे और मृत्यु की निश्चितता उजागर करते हैं। संसार में उत्पन्न और विकसित होने वाली प्रत्येक वस्तु परिवर्तन तथा क्षय के नियम से बँधी है। इसलिए पुरानों का अपने स्थान या अधिकार को सदा बनाए रखने का आग्रह व्यर्थ है। तुलसीदास की उक्ति लेखक की इसी बात को प्रमाण और प्रभाव प्रदान करती है।

चरण 3: निष्कर्ष तुलसीदास को इस शाश्वत सत्य की पुष्टि के लिए उद्धृत किया गया है कि जो उत्पन्न और विकसित होता है उसका क्षय तथा अंत भी निश्चित है।

त्वरित सुझाव: उद्धरण का केवल शब्दार्थ न दें; उसे गद्यांश के जरा, मृत्यु और अधिकार-मोह वाले विचार से जोड़ें।

11(घ). 'महाकाल देवता सपासप कोड़े चला रहे हैं' कथन से लेखक का क्या आशय है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- महाकाल समय की सर्वव्यापी और अपरिहार्य शक्ति का प्रतीक है।
- कोड़े चलाने का रूपक समय के कठोर प्रभाव और निरंतर परिवर्तन को मूर्त बनाता है।

चरण 1: रूपक का अर्थ खोलना महाकाल देवता के सपासप कोड़े चलाने का अर्थ है कि समय किसी के लिए रुकता नहीं और अपना प्रभाव लगातार डालता रहता है। उसके प्रहार से पुरानी, जीर्ण और दुर्बल वस्तुएँ नष्ट होती जाती हैं। यहाँ सचमुच कोड़े मारने की घटना नहीं, बल्कि काल की कठोर गति का चित्र है।

चरण 2: जीवन-संघर्ष से संबंध लेखक के अनुसार जीवनीशक्ति और काल की विनाशकारी शक्ति में निरंतर संघर्ष है। जिनमें थोड़ा भी ऊर्ध्वमुखी प्राण-कण, अर्थात आगे बढ़ने वाली जीवनशक्ति है, वे टिके रहते हैं; निर्जीव और दुर्बल झड़ जाते हैं। इसीलिए केवल पुराने स्थान से चिपके रहने के बजाय जीवन की सक्रियता और समय के परिवर्तन को समझना आवश्यक है।

चरण 3: निष्कर्ष कथन का आशय है कि काल निरंतर और निर्ममता से जीर्ण-दुर्बल को हटाता है; केवल जीवंत, विकासशील शक्ति ही उसके संघर्ष में टिक पाती है।

त्वरित सुझाव: महाकाल को समय और कोड़ों को उसके कठोर प्रभाव का प्रतीक बताकर जीर्ण-दुर्बल के झड़ने से अर्थ पुष्ट करें।

12(क). निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

गाँव में महामारी फैलने और अपने बेटों के देहांत के बावजूद लुट्टन पहलवान के ढोल बजाते रहने का मर्म स्पष्ट कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फणीश्वरनाथ रेणु की कहानी में ढोलक की ध्वनि संकटग्रस्त ग्रामीण जीवन की जिजीविषा का प्रतीक है।
- लुट्टन की कला व्यक्तिगत दुख से ऊपर उठकर सामूहिक मनोबल बनाए रखने का माध्यम बनती है।

चरण 1: महामारी की परिस्थिति महामारी से गाँव में मृत्यु का आतंक और घोर निराशा फैल जाती है। रात के सन्नाटे में बीमारों और उनके परिजनों के लिए जीवन जैसे ठहर जाता है। ऐसे वातावरण में लुट्टन की ढोलक का स्वर उन्हें बताता है कि अभी संघर्ष और जीवन शेष हैं। यह आवाज भय से दबे लोगों में साहस जगाती है।

चरण 2: निजी शोक के बीच कर्तव्य लुट्टन के दोनों बेटे भी महामारी में मर जाते हैं। यह उसके लिए असह्य व्यक्तिगत आघात है, फिर भी वह ढोल बजाना नहीं छोड़ता। ढोलक उसके पहलवानी जीवन की साथी और संघर्ष की प्रेरक रही है। उसी से प्राप्त हिम्मत अब वह पूरे गाँव तक पहुँचाना चाहता है। उसका बजाते रहना शोकहीनता नहीं, दुख को सहकर दूसरों का संबल बनने की क्षमता है।

चरण 3: जिजीविषा का मर्म ढोल की लय मृत्यु के भय के सामने हार न मानने का संदेश देती है। लुट्टन रोग का उपचार नहीं करता, किंतु निराश मनों को जीने और लड़ने का मानसिक बल देता है। अपने बेटों के वियोग में भी ग्रामीणों के लिए बजाना उसकी मानवीय संवेदना तथा कलाकार के सामाजिक दायित्व को प्रकट करता है। इस प्रसंग में कला जीवन की रक्षा करने वाली प्रेरणा बन जाती है।

चरण 4: निष्कर्ष लुट्टन का ढोल बजाते रहना मृत्यु और निजी शोक के सामने जिजीविषा की घोषणा है। वह अपनी कला से भयभीत गाँव को साहस, आशा और संघर्ष की प्रेरणा देता है।

त्वरित सुझाव: ढोलक को केवल मनोरंजन न बताएँ; महामारी के भय, बेटों की मृत्यु और ग्रामीणों के मनोबल को एक सूत्र में जोड़ें।

12(ख). निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

जीवन की जद्दोजहद ने चार्ली चैप्लिन के व्यक्तित्व को कैसे सम्पन्न बनाया ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जीवन के संघर्ष कलाकार की संवेदना, दृष्टि और अभिव्यक्ति को गहराई देते हैं।
- चार्ली की कला में हास्य और करुणा का मेल उनके अभावग्रस्त जीवनानुभवों से जुड़ा है।

चरण 1: संघर्ष की पृष्ठभूमि चार्ली चैप्लिन ने बचपन से गरीबी, अभाव और असुरक्षा का सामना किया। परिवार की कठिनाइयों तथा माँ के दुख ने उन्हें जीवन के कठोर यथार्थ से जल्दी परिचित करा दिया। उन्होंने वंचित मनुष्य की पीड़ा दूर से नहीं देखी, स्वयं भोगी थी। इस अनुभव ने उनके व्यक्तित्व में साधारण लोगों के प्रति गहरी सहानुभूति पैदा की।

चरण 2: संवेदना और दृष्टि का विकास जीवन की जद्दोजहद ने उन्हें अपमान, भूख और अकेलेपन के बीच भी मनुष्य की गरिमा पहचानना सिखाया। वे दुर्बल या हास्यास्पद दिखने वाले व्यक्ति में भी जीवन से जूझने की शक्ति देखते थे। इसी कारण उनका हास्य केवल हँसाने तक सीमित नहीं रहता; उसमें दुख की पहचान और पीड़ित मनुष्य के प्रति आत्मीयता भी होती है।

चरण 3: कला और व्यक्तित्व की सम्पन्नता अपने अनुभवों को कलात्मक अभिव्यक्ति देकर चार्ली ने हँसी और आँसू को साथ प्रस्तुत किया। उनका साधारण, संघर्षशील पात्र कठिन परिस्थितियों में भी हार नहीं मानता। इस रूप में जीवन की कठिनाइयाँ उनकी व्यापक मानवीय दृष्टि, करुणा और सहज हास्य का स्रोत बनीं। संघर्ष ने उन्हें मनुष्यों के साझा दुख-सुख समझने वाला संवेदनशील कलाकार बनाया, जिसकी कला से दर्शक अपना संबंध महसूस करते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष गरीबी और जीवन-संघर्ष ने चार्ली को गहरी मानवीय संवेदना, साधारण मनुष्य के प्रति आत्मीयता तथा करुणा से भरी हास्य-दृष्टि दी; इन्हीं से उनका व्यक्तित्व और कला सम्पन्न हुए।

त्वरित सुझाव: चार्ली के अभावों की सूची तक न रुकें; दिखाएँ कि उन्हीं से करुणा, जनसाधारण से जुड़ाव और हास्य की गहराई कैसे निकली।

12(ग). निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

" 'नमक' कहानी भारत-पाक के विभाजन के बावजूद मानवीय भावनाओं की समानता की कथा है ।" टिप्पणी कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रज़िया सज्जाद ज़हीर की कहानी में राजनीतिक सीमा लोगों के आत्मीय संबंधों और जन्मभूमि की स्मृतियों को मिटा नहीं पाती।
- नमक साधारण वस्तु होते हुए भी वतन की मिट्टी, स्वाद और साझा संस्कृति का प्रतीक बन जाता है।

चरण 1: सिख बीबी की स्मृति और इच्छा भारत में रहने वाली सिख बीबी लाहौर को भूल नहीं पातीं। वहाँ की स्मृतियाँ उनके मन में जीवित हैं और वे सफ़िया से लाहौरी नमक लाने को कहती हैं। उनकी यह छोटी-सी माँग वस्तु के मूल्य से अधिक उस मिट्टी से उनके लगाव को व्यक्त करती है जहाँ उनका अतीत बसा है। विभाजन के बाद निवास बदल गया है, किंतु मन का वतन नहीं बदला।

चरण 2: सीमा के दोनों ओर समान आत्मीयता सफ़िया इस इच्छा को पूरा करने का दायित्व अपनापन समझकर निभाती है। सीमा पर तैनात कस्टम अधिकारियों की प्रतिक्रियाएँ भी बताती हैं कि दूसरी ओर छूटे नगर और लोग उनके लिए आत्मीय हैं। राजनीतिक नियमों के बीच मानवीय संवेदना उभर आती है। सिख बीबी, सफ़िया और अधिकारियों की धार्मिक तथा राष्ट्रीय पहचान अलग होने पर भी स्मृति, स्नेह और जन्मभूमि का आकर्षण एक जैसा है। नमक ले जाने की घटना इस प्रकार अलग हुए लोगों के बीच एक भावनात्मक सेतु बनती है। कहानी राष्ट्रों के विरोध से ऊपर मनुष्यता को प्रतिष्ठित करती है।

चरण 3: निष्कर्ष कहानी दिखाती है कि भारत-पाक विभाजन भूभाग बाँट सकता है, लेकिन साझा संस्कृति, वतन की याद और मनुष्य के स्नेह को समाप्त नहीं कर सकता। नमक इन्हीं अविभाज्य मानवीय भावनाओं का प्रतीक है।

त्वरित सुझाव: टिप्पणी में सिख बीबी की माँग, सफ़िया का अपनापन और अधिकारियों की संवेदना को नमक के प्रतीकार्थ से जोड़िए।

12(घ). निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

शिरीष के संदर्भ में लेखक को गाँधी की याद क्यों आ गई ? दोनों के स्वभाव में समानता रेखांकित कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- हज़ारीप्रसाद द्विवेदी शिरीष के फूल में प्रतिकूलता के बीच प्रसन्नता, कोमलता और जीवन की अजेय शक्ति देखते हैं।
- गाँधीजी की अहिंसा और धैर्य बाहरी संकटों के बीच भीतर की दृढ़ता के उदाहरण हैं।

चरण 1: विपरीत परिस्थिति में अविचल रहना तेज़ गरमी, लू और उमस में भी शिरीष खिला रहता है। उसका फूल कोमल है, फिर भी वह कठोर वातावरण से पराजित नहीं होता। इस स्वभाव को देखकर लेखक को गाँधीजी की याद आती है। गाँधीजी भी अपने चारों ओर फैली हिंसा और घृणा के बीच विचलित होकर अपना मानवीय विश्वास नहीं छोड़ते थे। बाहरी संकट दोनों की भीतरी शक्ति को समाप्त नहीं कर पाता।

चरण 2: कोमलता के साथ दृढ़ संकल्प शिरीष में कठोर जीवन-संघर्ष और कोमल फूल साथ-साथ मौजूद हैं। गाँधीजी में भी अन्याय का विरोध करने की अडिग शक्ति के साथ करुणा, प्रेम और अहिंसा बनी रहती है। वे घृणा का उत्तर घृणा से देने के बजाय लोगों के बीच शांति और सद्भाव स्थापित करने का प्रयत्न करते हैं। दोनों अपने वातावरण की कठोरता को अपने स्वभाव में नहीं उतारते और कठिन समय में जीवन तथा मानवता के प्रति आस्था बनाए रखते हैं। यह समानता केवल बाहरी सहनशीलता की नहीं, भीतर की अनासक्ति और लोककल्याण की भावना की भी है।

चरण 3: निष्कर्ष लेखक को गाँधीजी की याद इसलिए आती है कि शिरीष की तरह वे भी प्रतिकूल परिस्थितियों में अविचल, भीतर से दृढ़ और व्यवहार में कोमल रहे। संकट में धैर्य, प्रेम और जीवन-विश्वास बनाए रखना दोनों की प्रमुख समानता है।

त्वरित सुझाव: शिरीष की लू में खिलने की क्षमता को गाँधीजी के हिंसा के बीच अहिंसा और सद्भाव बनाए रखने से जोड़िए।

12(ङ). निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

डॉ. आंबेडकर की कल्पना के आदर्श समाज के तीन बिन्दुओं का उल्लेख कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- डॉ. आंबेडकर का आदर्श समाज स्वतंत्रता, समता और भ्रातृत्व पर आधारित है।
- सामाजिक लोकतंत्र में मनुष्यों का सम्मान और परस्पर संपर्क जातिगत ऊँच-नीच से अधिक महत्त्वपूर्ण हैं।

चरण 1: स्वतंत्रता का व्यापक अधिकार आदर्श समाज में प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन के विकास की स्वतंत्रता मिलनी चाहिए। उसे आने-जाने, अपने जीवन और सुरक्षा की रक्षा करने तथा अपनी क्षमता के अनुसार व्यवसाय चुनने का अवसर प्राप्त हो। जन्म और जाति के आधार पर किसी व्यक्ति का पेशा स्थायी कर देना स्वतंत्रता का निषेध है। इसलिए सामाजिक व्यवस्था को व्यक्ति की रुचि और योग्यता के विकास में बाधा नहीं बनना चाहिए।

चरण 2: समता और भ्रातृत्व की स्थापना दूसरा आधार समता है। सभी लोगों में पूर्ण प्राकृतिक समानता संभव न होने पर भी समाज को प्रत्येक व्यक्ति के साथ समान सम्मान का व्यवहार करना चाहिए और उसे उन्नति के अवसर देने चाहिए। तीसरा आधार भ्रातृत्व है। समाज के विभिन्न वर्गों में मुक्त संपर्क, सहभागिता और अनुभवों का आदान-प्रदान होना चाहिए। सामाजिक संबंधों में कठोर अलगाव न हो और सभी लोग एक-दूसरे के सुख-दुख को अपना समझें। इसी साझे जीवन में लोकतंत्र की वास्तविक भावना निहित है।

चरण 3: निष्कर्ष आंबेडकर की कल्पना के आदर्श समाज के तीन मुख्य बिंदु हैं: व्यक्ति की स्वतंत्रता, व्यवहार और अवसरों की समता तथा परस्पर सहयोग और आत्मीयता पर आधारित भ्रातृत्व। इनसे जातिगत बंधनों से मुक्त लोकतांत्रिक समाज बनता है।

त्वरित सुझाव: तीनों आधारों के साथ उनका अर्थ भी लिखिए: स्वतंत्र चुनाव, समान अवसर और वर्गों के बीच आत्मीय संपर्क।

13. यशोधर बाबू किन जीवन-मूल्यों को थामे बैठे हैं ? नई पीढ़ी उन्हें प्रासंगिक क्यों नहीं मानती ? तर्कसम्मत उत्तर दीजिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मनोहर श्याम जोशी की कहानी सिल्वर वैडिंग में यशोधर बाबू की परंपरानिष्ठ जीवन-दृष्टि और परिवार की आधुनिक आकांक्षाओं का टकराव उभरता है।
- दो पीढ़ियों के मतभेद को उनके अनुभव, आर्थिक परिस्थिति और संबंधों से जुड़ी अपेक्षाओं के संदर्भ में समझना चाहिए।

चरण 1: यशोधर बाबू के जीवन-मूल्य यशोधर बाबू सादगी, संयम, ईमानदारी, कर्तव्यपरायणता और पारिवारिक आत्मीयता को महत्त्व देते हैं। वे दिखावे तथा अनावश्यक उपभोग से दूर रहकर सीमित साधनों में संतोष करना उचित समझते हैं। अपने मार्गदर्शक किशनदा के संस्कारों और जीवन-अनुभवों को वे आदर्श मानते हैं। उनके लिए बड़े-बुजुर्गों का सम्मान, रिश्तों का निर्वाह तथा दूसरों के काम आना जीवन की सार्थकता के आवश्यक अंग हैं। इसलिए वे नए आचार-व्यवहार को केवल फैशन या सुविधा के आधार पर स्वीकार नहीं कर पाते।

चरण 2: नई पीढ़ी का अलग दृष्टिकोण उनके बच्चे आर्थिक उन्नति, व्यक्तिगत स्वतंत्रता, आधुनिक सुविधाओं और उत्सव के नए तरीकों को महत्त्व देते हैं। विवाह की पच्चीसवीं वर्षगाँठ का आयोजन इसी बदली हुई जीवन-शैली का उदाहरण है। नई पीढ़ी पिता की पुरानी आदतों और बार-बार किशनदा के उदाहरण देने को आज की जरूरतों से असंगत मानती है। उसके लिए उपलब्ध साधनों का उपयोग और अपनी इच्छा से जीवन जीना स्वाभाविक है। यशोधर बाबू का परिवर्तन के प्रति संकोच उसे अनावश्यक रोक-टोक लगता है।

चरण 3: दोनों दृष्टियों का तर्कसम्मत मूल्यांकन कहानी का आशय यह नहीं है कि ईमानदारी, सादगी या आत्मीयता अप्रासंगिक हो गई हैं। ये मूल्य आज भी आवश्यक हैं; समस्या तब होती है जब इनके साथ जुड़ी हर पुरानी रीति को अपरिवर्तनीय मान लिया जाए। दूसरी ओर नई पीढ़ी की सुविधाएँ और आर्थिक सफलता पारिवारिक संवेदना का विकल्प नहीं बन सकतीं। बेटे के उपहार में निहित अकेलेपन का संकेत यशोधर बाबू को दुखी करता है। इससे स्पष्ट होता है कि उन्हें वस्तुओं से अधिक साथ और अपनापन चाहिए। दोनों पीढ़ियों में संवाद और पारस्परिक सम्मान का अभाव दूरी बढ़ाता है।

चरण 4: निष्कर्ष यशोधर बाबू सादगी, ईमानदारी, कर्तव्य, बुजुर्गों के सम्मान और आत्मीय संबंधों को थामे हैं। नई पीढ़ी उनकी परंपराबद्ध जीवन-पद्धति को बदलते समय से असंगत समझती है। उचित दृष्टि यह है कि मानवीय मूल्यों को बचाते हुए जीवन के तरीकों में आवश्यक परिवर्तन स्वीकार किए जाएँ।

त्वरित सुझाव: उत्तर में मूल्यों और पुरानी आदतों का भेद स्पष्ट कीजिए तथा वर्षगाँठ, किशनदा और उपहार के प्रसंगों से मतभेद समझाइए।

14(क). टूटे-फूटे खंडहर सभ्यता और संस्कृति के इतिहास के साथ-साथ धड़कती ज़िन्दगियों के अनछुए समयों के जीवन्त दस्तावेज़ होते हैं। कैसे? 'अतीत में दबे पाँव' पाठ के आधार पर उत्तर की पुष्टि कीजिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पुरातात्त्विक अवशेष केवल भवनों का इतिहास नहीं बताते; वे उन भवनों में रहने वाले मनुष्यों की दिनचर्या, रुचियों और सामाजिक संबंधों के प्रमाण भी सँजोते हैं।
- ओम थानवी के यात्रा-वृत्तांत 'अतीत में दबे पाँव' में मोहनजोदड़ो की नगर-योजना और घरेलू वस्तुओं के माध्यम से अतीत के सामान्य जन का जीवन सजीव होता है।

चरण 1: नगर के अवशेषों में जीवन की व्यवस्था मोहनजोदड़ो के खंडहरों में दिखाई देने वाली सीधी सड़कें, गलियाँ, पक्की ईंटों के मकान, कुएँ और ढकी हुई नालियाँ वहाँ के निवासियों की सुव्यवस्थित जीवन-शैली का परिचय देती हैं। घरों में स्नान और जल-निकास की व्यवस्था से स्वच्छता के प्रति उनका सजग दृष्टिकोण समझ में आता है। विशाल स्नानागार सामुदायिक जीवन और निर्माण-कौशल का प्रमाण है। ये अवशेष बताते हैं कि नगर केवल इमारतों का समूह नहीं था; उसमें लोगों की आवश्यकताओं और सामूहिक सुविधाओं का ध्यान रखा जाता था।

चरण 2: घरेलू वस्तुओं में साधारण मनुष्यों की उपस्थिति मिले हुए बरतन, चक्कियाँ, आभूषण और खिलौने तत्कालीन लोगों के भोजन, श्रम, सौंदर्यबोध तथा बच्चों के संसार की झलक देते हैं। बैलगाड़ी और अन्य खिलौनों में बच्चों का खेल और बड़ों के जीवन का अनुकरण दिखाई देता है। नर्तकी की प्रतिमा कला और मानवीय अभिव्यक्ति का साक्ष्य है। इस प्रकार निर्जीव लगने वाली वस्तुएँ उन हाथों, इच्छाओं और अनुभवों का संकेत करती हैं जिनसे कभी उनका संबंध था। पाठक खंडहरों के पीछे बसे घरों और उनमें धड़कते जीवन की कल्पना कर पाता है।

चरण 3: सभ्यता के मानवीय स्वरूप का बोध लेखक को यहाँ भव्य राजमहलों और शासकीय शक्ति के प्रदर्शन से अधिक सामान्य जीवन की छाप मिलती है। वह इसे कमोबेश 'लो-प्रोफाइल' संस्कृति के रूप में देखता है। छोटी वस्तुओं की सुंदर बनावट और नगर की उपयोगी व्यवस्थाएँ बताती हैं कि सौंदर्य तथा समझ केवल विशिष्ट लोगों तक सीमित नहीं थे। खंडहरों में घूमते हुए वर्तमान और अतीत का अंतर घटता है; कभी आबाद रही गलियाँ मनुष्य की परिचित गतिविधियों से भर उठती हैं। इसी अनुभूति से यात्रा-वृत्तांत इतिहास के तथ्यात्मक विवरण से आगे बढ़कर मनुष्य के जीवन का संवेदनशील चित्र बनता है।

चरण 4: निष्कर्ष अतः मोहनजोदड़ो के टूटे-फूटे खंडहर सभ्यता की प्राचीनता के साथ उसकी स्वच्छता, कला, श्रम, खेल और सामुदायिक जीवन का भी परिचय देते हैं। वे इतिहास के प्रमाण होने के साथ बीते मनुष्यों की जीवित स्मृतियों के दस्तावेज़ हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में नगर-योजना का एक प्रमाण और घरेलू जीवन की दो वस्तुएँ देकर उन्हें मनुष्य की दिनचर्या से जोड़िए; केवल खंडहरों की सूची न बनाइए।

14(ख). 'जूझ' कहानी के लेखक के जीवन-संघर्ष के उन बिन्दुओं पर प्रकाश डालिए जो हमारे लिए प्रेरणादायक हैं । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आनंद यादव का आत्मकथात्मक पाठ 'जूझ' प्रतिकूल पारिवारिक और आर्थिक परिस्थितियों में शिक्षा पाने के संघर्ष का चित्रण करता है।
- लेखक का श्रम, धैर्य, पढ़ने की दृढ़ इच्छा और रचनात्मक अभ्यास बताते हैं कि निरंतर प्रयास तथा उचित मार्गदर्शन से व्यक्तित्व का विकास होता है।

चरण 1: कठिन परिस्थितियों में शिक्षा का संकल्प लेखक का बचपन खेती के काम और पिता की कठोर अपेक्षाओं के बीच बीता। पिता उसे विद्यालय भेजने के स्थान पर खेत के काम में लगाना चाहते थे। लेखक समझता था कि केवल खेती में उलझे रहने से जीवन बदलने की संभावना सीमित हो जाएगी; पढ़ाई उसे आगे बढ़ने का मार्ग दे सकती है। इसलिए स्कूल छूट जाने पर भी उसकी पढ़ने की इच्छा समाप्त नहीं हुई। कठिन परिस्थितियों को अपनी नियति मानकर बैठ जाने के बजाय उसने शिक्षा जारी रखने का उपाय खोजा। लक्ष्य के प्रति यह स्पष्टता और दृढ़ संकल्प हमारे लिए प्रेरणादायक हैं।

चरण 2: सहायता लेकर संघर्ष को व्यावहारिक बनाना लेखक ने अपनी माँ के साथ दत्ता जी राव के सामने अपनी समस्या रखी। उनके हस्तक्षेप से पिता को उसे विद्यालय भेजने के लिए सहमत होना पड़ा। इसके बाद भी लेखक को खेत का काम छोड़ने की पूरी छूट नहीं मिली। उसने श्रम और पढ़ाई दोनों की कठिन जिम्मेदारियाँ निभाईं। इससे सीख मिलती है कि संघर्ष केवल विरोध करने का नाम नहीं है; उपयुक्त व्यक्ति की सहायता लेना, अवसर पहचानना और मिलने वाले अवसर के लिए मेहनत करना भी उसका आवश्यक अंग है।

चरण 3: अभ्यास से आत्मविश्वास और रचनात्मकता का विकास विद्यालय लौटने पर आरंभिक झिझक और सहपाठियों के व्यवहार से उपजी कठिनाई के बावजूद लेखक ने पढ़ाई से मुँह नहीं मोड़ा। परिश्रम से वह अध्ययन में आगे बढ़ा। न. वा. सौंदलगेकर मास्टर के भावपूर्ण कविता-पाठ ने उसकी काव्य-रुचि जगाई। वह कविताएँ याद करता, उन्हें गुनगुनाता और स्वयं कविता रचने का अभ्यास करता था। खेत में काम करते समय भी उसका मन शब्दों, लय और भावों से जुड़ा रहता। शिक्षक के प्रोत्साहन और अपने अभ्यास से उसकी अभिव्यक्ति निखरने लगी। इस प्रसंग में प्रतिभा के विकास के लिए संवेदनशील शिक्षक और साधक के निरंतर श्रम, दोनों का महत्त्व स्पष्ट होता है।

चरण 4: निष्कर्ष लेखक की जीवन-यात्रा हमें सिखाती है कि अभाव, पारिवारिक बाधाएँ और आरंभिक संकोच प्रगति को रोकने वाले अंतिम सत्य नहीं हैं। शिक्षा के प्रति लगन, सहायता लेने की समझ, कठोर परिश्रम और रचनात्मक अभ्यास से मनुष्य अपनी राह बना सकता है।

त्वरित सुझाव: प्रेरणादायक गुण लिखते समय हर गुण के साथ पाठ का प्रसंग जोड़िए—पढ़ाई के लिए संघर्ष, दत्ता जी राव की सहायता और कविता का अभ्यास।